मार्च 2025 ₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

भाजपा सरकार भाषा न संस्कार

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

सियासतदानों को किसी विषय पर पर्याप्त अध्ययन के बाद ही बोलने की आदत डालनी चाहिए तभी रचनात्मक राजनीति संभव है। राजनीति में सिर्फ आलोचना से काम नहीं चलेगा बल्कि समस्या के समाधान पर भी बात होनी चाहिए। सत्ता पक्ष को विपक्ष के सकारात्मक सुझावों पर अमल भी करना चाहिए। समाजवादी विचारधारा से ही देश की समस्याओं के समाधान व विदेश नीति पर बेहतर राय मिलती है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

मार्च 2025

वर्ष 26 | संख्या 05

PDA काव्य विचार

सामाजिक न्याय की गाथा गाएंगे
मिलजुल कर समाज को जगाएंगे
एकता की अब ऐसी लौ जलाएंगे
उठेंगें सब PDA को गले लगाएंगे
सब मिलकर भाजपा को हराएंगे
हम फिर अखिलेश सरकार लाएंगे

-दिनेश गौतम
कुशीनगर

प्रिय पाठकों,

PDA काव्य विचार के लिए आपकी स्वरचित लघु कविता का स्वागत है। केवल उन्हीं लघु कविताओं पर विचार किया जाएगा जो PDA केन्द्रित, सुस्पष्ट, मौलिक, न्यूनतम 4 से 6 लाइनों में टाइपशुदा होंगी। अपनी लघु कविता ईमेल teamsbeditorial@gmail.com पर अपने नाम और पते के साथ भेजें।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

आधी आबादी का अखिलेश पर पूरा विश्वास 32

06 कवर स्टोरी

भाजपा सरकार भाषा न संस्कार

अखिलेश को मिल रहा भारी जनसमर्थन 22

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की लोकप्रियता में दिनों-दिन इजाफा हो रहा है। जिलों के दौरों के दौरान उमड़ रही भीड़ गवाही दे रही है कि 2027 में श्री अखिलेश यादव की सरकार आने वाली है क्योंकि जनता भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए कमर कस चुकी है।

यूपी विधानसभा में हिंदी के अस्तित्व को ख़तरा 04

सबके हमदर्द हैं अखिलेश 30

अग्रलेख

यूपी विधानसभा में हिंदी के अस्तित्व को ख़तरा

उदय प्रताप सिंह

संविधान के अनुसार भारत सरकार में कामकाज की मान्यता प्राप्त भाषाएं हिंदी और अंग्रेजी हैं लेकिन हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का सपना देखने वाले हम समाजवादी लोग अंग्रेजी की प्रमुखता को समाप्त करने चाहते थे इसके लिए जाने कब से कठिन संघर्ष किया जा रहा है लेकिन फरवरी माह में बजट सत्र के दौरान विधानसभा में, वह भी उत्तर प्रदेश की विधानसभा में जहां हिंदी की प्रमुखता थी वहां भाषा के नाम पर अनावश्यक विवाद खड़ा कर दिया गया।

असलियत यह है कि सरकार अपने एजेंडा के अनुसार उत्तर प्रदेश राज्य को चार भागों में बांटना चाहती है और इसी आधार पर विधानसभा में चार भाषाओं की यह बलात चर्चा छेड़कर फिलर (feeler) छोड़ा गया है अन्यथा उत्तर प्रदेश की विधानसभा में ऐसा कौन विधायक है जो हिंदी नहीं समझता है या हिंदी से ज्यादा अंग्रेजी समझता है। फिर चार-चार भाषाओं के अनुवाद करने का खर्चा जनता के पैसे को बर्बाद करना नहीं है तो और क्या है?

अगर सब विधायक हिंदी समझते हैं तो फिर किसकी सुविधा के लिए यह फेरबदल किया जा रहा है और इस जन धन का दुरुपयोग किया जा रहा है अन्यथा अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेलखंडी, यह सब हिंदी की बोलियां, जाने कब से, मानी जाती रही हैं। बोली और भाषा में अंतर होता है यह बात इन राजनीतिज्ञों को शायद पता नहीं है ।

एक मशहूर कहावत है कि "कोस कोस पर पानी बदले चार कोस पर वाणी " वाणी और भाषा का भेद इस कहावत से स्पष्ट हो जाता है। विधानसभा में जिनको भाषा कहा गया है वह हिंदी की ही प्रमुख बोलियां हैं। अगर इन बोलियां को हिंदी में से निकाल दिया जाएगा, तो हिंदी पर भाषा कहलाने लायक कुछ नहीं

बचेगा और तब लाखों शहीदों का हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का सपना, सपना ही रह जाएगा। यह तय है।

लेकिन राजनीति में तत्काल लाभ के चक्कर में उत्तर प्रदेश की विधानसभा में सरकार द्वारा प्रकारान्तर से अंग्रेजी को मान्यता दी जा रही है और हिंदी को कमज़ोर किया जा रहा है ।

एक बार गांधी जी ने कहा था कि "हिंदुस्तान से अंग्रेजों के जाने के बाद भी अगर अंग्रेजी की प्रमुखता नहीं गई तो यह देश आज़ादी के बाद भी आज़ाद नहीं होगा। गांधी जी ने यह भी कहा था कि दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी बिल्कुल नहीं जानता जबकि गांधी जी अंग्रेजी के बड़े विद्वान थे और उनकी आत्मकथा की अंग्रेजी भाषा की प्रशंसा अंग्रेजों तक ने की है। बीजेपी के लोग गांधी को केवल मौखिक रूप से, वह भी कभी-कभार सम्मान देते हैं, पर उनके विचारों की क़द्र नहीं करते, इसका सबसे बड़ा सबूत विधानसभा में भाषा के नाम पर बहस में दिखाई पड़ा।

उर्दू का विरोध करके भी, हिंदी को ही कमज़ोर और अंग्रेजी को मज़बूत किया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि बोलचाल में हिंदी और उर्दू एक ही भाषा खड़ी बोली के दो रूप हैं।

अकबर इलाहाबादी ने एक शेर में कहा था कि

"हिंदी और उर्दू में फर्क है इतना
वह ख्वाब देखते हैं हम देखते हैं सपना"

यानी हिंदी और उर्दू में कोई अंतर नहीं है। कम से कम बोलने के स्तर पर हिंदी में मेज, कुर्सी, तकिया, कमीज, शिकायत जैसे अनेक शब्द हैं,जो उर्दू के जरिए हिंदी में आए हैं उनके हिंदी पर्याय ढूंढना अच्छे-अच्छों के लिए लोहे के चने चबाना है। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री का यह कहना कि उर्दू पढ़कर क्या बच्चों को मौलवी बनाना चाहते हैं, यह वक्तव्य उनकी अज्ञानता को दर्शाता है। उत्तर प्रदेश में सरकार के स्तर पर अभी तक हिंदी प्रमुख और उर्दू को दूसरी भाषा के रूप में मान्यता दी गई है लेकिन उनका हिंदुत्व का एजेंडा उन्हें उर्दू की अहमियत स्वीकार नहीं करने देता, यह संकीर्णता और संविधान का उल्लंघन देश को कहां ले जाए ईश्वर ही जानता होगा।

फोटो स्रोत : गूगल

भाजपा सरकार भाषा न संस्कार

बुलेटिन ब्यूरो

भारतीय राजनीति में अब यह स्थापित हो चुका है कि भाजपा से भाषाई संस्कार या शिष्टाचार की अपेक्षा बेमानी है। भाजपा नेताओं के बोल हमेशा ही देश के सांप्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने में आगे रहे हैं। हाल के कुछ दिनों में भाजपा नेताओं ने फिर यह साबित कर दिया कि भाषाई शिष्टाचार से उनका कोई नाता-वास्ता नहीं है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर और न ही नेताजी मुलायम सिंह यादव के लिए भाजपा नेताओं की जुबान पर सम्मान बचा है और न ही आमजन उनके लिए कोई मायने रखते हैं। बाबा साहब के बारे में देश के गृहमंत्री ने लोकसभा में जो अमर्यादित टिप्पणी की, उसे पूरे देश ने सुना था और अब यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया, उसे भी दुनिया ने सुना है और भाजपा की खूब लानत-मलानत की जा रही है मगर सत्ता के अहंकार में डूबे भाजपा नेताओं को इससे कोई फर्क

नहीं पड़ रहा है।

देश जानता है कि पिछड़े, दलितों, अल्पसंख्यकों और दबे-कुचले सभी वर्गों के लिए बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर ने संविधान में अधिकार दिलाया। यही वजह है कि कृतज्ञ देश उन्हें सम्मान के साथ याद करता है मगर जब देश के गृहमंत्री ने सदन में अमर्यादित टिप्पणी कर दी और पूरी भाजपा मौन रही तो यह उसके भाषाई संस्कार बताने के लिए काफी रहा।

उत्तर प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र के दौरान भी जिस तरह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने टिप्पणी की, वह कहीं से भी भाषाई संस्कार की श्रेणी में नहीं आती। महाकुंभ के संदर्भ में उनका यह कहना कि जिसने जो तलाशा, उसको वही मिला। गिद्धों को केवल लाशें दिखीं, सूअरों को गंदगी मिली। यह कहकर उन्होंने तमाम श्रद्धालुओं की भावनाओं को आहत ही किया।

खासकर उन लोगों को जरूर चोट पहुंची जो महाकुंभ में खोये हुए अपने लोगों की तलाश में जुटे थे। मुख्यमंत्री ने विधानसभा में ही कई और अमर्यादित टिप्पणियां कर भाजपा के तथाकथित संस्कारी आचरण के ढोल की पोल खोल दी। उर्दू भाषा को लेकर उनके विचार एक खास समुदाय को निशाने पर लेने वाले ही रहे। मुख्यमंत्री या तो यह भूल गए कि उर्दू भाषा किसी मजहब की नहीं बल्कि हिंदुस्तानी भाषा है या फिर उन्हें इसका भान ही नहीं था। उर्दू पढ़ने-जानने वालों के कठमुल्ला बनने का उनका जुमला न केवल नकारात्मक बल्कि बेहद आपत्तिजनक था। जिस उर्दू भाषा को लेकर वह बदजुबानी कर गए, उसका वह अक्सर ही नहीं हर अवसर पर खूब इस्तेमाल भी करते हैं। शेर भी पढ़ते हैं। इसी सत्र में उन्होंने अपने भाषण में उर्दू के शब्दों का भरपूर इस्तेमाल किया।

भाजपा के इसी आचरण का सिलसिला विधानसभा में जारी रखते हुए सरकार में उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने पिछड़ों, अल्पसंख्यकों, दलितों, दबे कुचलों की हमेशा आवाज बने रहे नेताजी मुलायम सिंह यादव पर भी टिप्पणी करने से गुरेज नहीं किया।

फोटो स्रोत : गूगल

ऐसा नहीं है कि मुख्यमंत्री या भाजपा नेताओं ने भाषाई शिष्टाचार, संस्कार को पहली बार छोड़ा हो। दुनिया जानती है कि यूपी के मुख्यमंत्री हमेशा से ही आपत्तिजनक और अमर्यादित भाषा बोलते रहे हैं। उनके बिगड़े बोल की वजह से कई बार सांप्रदायिक सौहार्द को धक्का लगा है।

यह सभी जानते हैं कि भाजपा सत्ता के लिए एक-दूसरे को लड़ाती रही है। उसकी नीति वैसी ही है जैसा अंग्रेज करते थे कि फूट डालो-राज करो। भाजपा की पुरानी फितरत है कि जब भी उसके हाथ से सत्ता जाने लगती है तो वह समाज में बंटवारे की कोशिश में जुट जाती है।

दरअसल राजनीति में आलोचना करना विपक्ष का धर्म हुआ करता है पर कभी भी नेताओं ने भाषाई शिष्टाचार का दामन नहीं छोड़ा। नेहरू-लोहिया से लगायत अटल जी और नेताजी मुलायम सिंह यादव तक एक दूसरे की विचारधारा, नीति की आलोचनाएं होती रही हैं मगर ऐसा कोई भी अवसर नहीं आया जबकि किसी ने एक-दूसरे पर या संप्रदाय को लेकर भाषा का संस्कार छोड़ा हो। पर 2014 के बाद से प्राय: यह देखा जा रहा है कि भाजपा नेताओं की एक बड़ी जमात लगातार भाषाई संस्कार को छोड़कर ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करती है जिससे दूसरों की भावनाओं को चोट पहुंचती रहे। सबसे आश्चर्यजनक यह है कि भाजपा पर लगाम रखने वाला आरएसएस भी इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने की कोशिश नहीं करता दिखता जबकि वह खुद को शालीन, संस्कार वाला बताता है।

पर, भाजपा नेता यह भूल गए हैं कि जनता सबकुछ देख रही है और अब उसके सिर से भी पानी ऊपर हो गया है। वह भी समझ चुकी है कि भाजपा नेताओं ने संस्कार का दामन छोड़ दिया है और उनमें मर्यादा, शुचिता नहीं बची है इसलिए आमजनता अब भाजपा को सत्ता से बेदखल करने को तैयार है। भाजपा नेताओं के ये बिगड़े बोल अब उसपर भारी पड़ने जा रहे हैं और 2027 में यूपी से भाजपा की विदाई तय है और फिर एकबार अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनने वाली है।

यूपी के सीएम संवेदनहीन हैं

- अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ में भावनात्मक संवेदना नही है। वह अमर्यादित और अलोकतांत्रिक भाषा का प्रयोग करते हैं। पीड़ित, दुखी और परेशान लोगों को अपमानित करना मुख्यमंत्री जी का स्वभाव है।

उन्होंने कहा कि सत्ता के अहंकार में भाजपा राजनीतिक शिष्टाचार विहीन हो गई है। अब तो हद हो गई है कि मुख्यमंत्री जी महाकुंभ भगदड़ में मरने वाले लोगों के परिवारों को भी नहीं छोड़ रहे हैं। पीड़ित और दुखी परिवारों की मदद करने के बजाय मुख्यमंत्री जी गिद्ध जैसे शब्द बोलकर उन्हें अपमानित कर उनका दर्द और बढ़ा रहे हैं।

श्री यादव ने कहा कि गिद्ध कहकर मुख्यमंत्री ने महाकुंभ में खोए हुए अपनों की खोज कर रहे लोगों और मृतकों के परिवारों को अपमानित किया है। महाकुंभ में बड़ी संख्या में लोग अपनों को खोज रहे थे, कही भाई-भाई को ढूंढता रहा है तो कहीं बेटा पिता को, बेटी मां को ढूंढती रही । काफी लोग अभी तक नहीं मिले हैं। उन्होंने पूछा कि क्या अपनों को ढूंढने वालों को मुख्यमंत्री गिद्ध बोल रहे हैं। श्री यादव ने कहा कि यह संवैधानिक पद पर बैठे एक मुख्यमंत्री की संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है।

श्री यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री गोरखपुर में गिद्ध प्रजनन केन्द्र बना रहे हैं। गिद्ध की बात कहकर वह प्रयागराज महाकुंभ की भगदड़ के पीड़ित और दुखी परिवारों को अपमानित कर रहे हैं। प्रयागराज महाकुंभ में भगदड और अव्यवस्था के लिए खुद मुख्यमंत्री जी जिम्मेदार हैं। वह किस बात की निगरानी और निरीक्षण करते रहे जो इतनी बड़ी घटना

उर्दू का विरोध उर्दू में !

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कुछ लोगों ने उर्दू का विरोध उर्दू में किया है। यह पहली सरकार है जो उर्दू का विरोध उर्दू में ही कर रही है। सपा मुखिया ने कहा कि विधानसभा में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने कई बार उर्दू के शब्द बोले। बदनाम, बख्शा नहीं जाएगा, पैदा, गुनहगार, मौत, पायदान, सरकार। श्री यादव ने सवाल किया कि क्या यह उर्दू के शब्द नहीं हैं।

श्री यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री जी को कुछ पता ही नहीं कि उर्दू भारतीय भाषा है। यहीं जन्मी। यहीं मेरठ के आसपास से निकली। दरअसल मुख्यमंत्री जी जो बोल रहे थे, वही उनकी स्वाभाविक शैली है। उर्दू का विरोध करते हैं लेकिन इनका कोई भाषण यहां तक कि बजट भाषण भी बिना उर्दू के पूरा नहीं हुआ। वित्तमंत्री ने बजट की गोपनीयता के लिए मुख्यमंत्री जी को भी नहीं दिखाया। अगर मुख्यमंत्री जी को दिखा दिए होते तो वह यह शेर नहीं पढ़ पाते- जिस दिन से चला हूं, मेरी मंजिल पर नज़र है।

हो गई। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि महाकुंभ में हुई भगदड मुख्यमंत्री जी और भाजपा सरकार की नाकामी है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा की लखनऊ और दिल्ली की सरकार आपस में लड़ रही हैं। संगम में गंगा के पानी की गुणवत्ता को लेकर केंद्रीय और राज्य एजेन्सियां आपस में टकराते रहे। राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कह रहा है कि पानी साफ हैं, वहीं केन्द्रीय प्रदूषण की रिपोर्ट है कि गंगा का पानी नहाने लायक नहीं है। उसकी गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाए हैं। साथ ही गंदगी को लेकर एनजीटी ने सवाल उठाया है। गंगा के पानी को लेकर हम लोगों ने नहीं खुद केन्द्र सरकार और उसकी एजेन्सियां सवाल उठा रही हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कपड़ा पहनने से हर कोई योगी नही बन जाता है। भाषा, व्यवहार और आचरण से योगी बनते हैं। पूरा सनातनी समाज और जन-जन जानता है कि जब रावण ने सीता मां का अपहरण किया था तब विशेष तरह का कपड़ा पहनकर साधू भेष धारण कर आया था। हम सभी को ऐसे लोगों से सावधान रहना होगा जिनकी भाषा और व्यवहार बहुत खराब हो चुके हैं।

श्री यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री समाजवादियों पर अनर्गल टिप्पणी कर रहे हैं। मुख्यमंत्री जी को समाजवाद, समाजवादियो और लोकतंत्र के बारे में कुछ नही पता है। समाजवादी सबको साथ लेकर चलते हैं। सबका सम्मान करते हैं। भाजपा की तरह नफरत नहीं फैलाते है। प्रदेश की जनता सब देख रही है कि भाजपा ने मंहगाई और भ्रष्टाचार फैलाकर सब कुछ बर्बाद कर दिया है। भाईचारा को नुकसान पहुंचाया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकतंत्र में जनता जनार्दन होती है। जनता सरकार चुनती है। लोकतंत्र की सरकार तानाशाह नहीं हो सकती है लेकिन भाजपा सरकार का व्यवहार तानाशाही का है।

यह राजनीतिक विरोधियों को प्रताड़ित और परेशान कर रही है। भाजपा राज में लोगों को स्वतंत्र रूप से बोलने और लिखने का अधिकार नही रह गया है। समाजवादी पार्टी के कई लोगों के साथ द्वेषभाव से कार्यवाही की गयी। भाजपा सरकार का आचरण बेहद निन्दनीय है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में अन्याय, अत्याचार चरम पर है। किसी को न्याय नहीं मिल रहा है। आने वाले विधान सभा चुनाव में भाजपा की रिकार्ड हार होगी। समय के साथ इनका पता नहीं चलेगा।

जब सत्ता और परायापन धर्म बन जाए

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

जब सत्ता और परायापन समाज का धर्म बन जाए तो कोई भी राजनेता वही भाषा बोलेगा जो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा में बोली। अपने आयोजनों को बढ़ा चढ़ाकर गर्व और अहंकार के साथ प्रस्तुत करने में माहिर मौजूदा सरकार की भाषा वही होगी जो वह बोल रही है। इसलिए महाकुंभ में हुई भीड़, जाम, भगदड़ और लोगों की मौत पर वह माफी मांगने के बजाय यही कह रही हैः—महाकुंभ में जिसने जो तलाशा, उसको वही मिला। गिद्धों को केवल लाशें दिखीं, सूअरों को गंदगी मिली। संवेदनशील लोगों को रिश्तों की खूबसूरती मिली, आस्थावान लोगों को पुण्य मिला, सज्जनों को सज्जनता मिली और भक्तों को भगवान मिले।

अगर इस बयान के साथ अपनों की लाशें तलाशने वालों को गिद्ध और सेक्टर 15 में बसे और लोगों की गंदगी उठाने वालों को गिद्ध और सूअर ना कहा गया होता तो यह बयान बहुत खूबसूरत हो सकता था। बल्कि जिनके परिजन गए हैं उनकी परेशानी के लिए दो शब्द सांत्वना के जता दिए गए होते तो सरकार का कुछ बिगड़ न जाता बल्कि उसकी छवि और बेहतर हो जाती। अगर भगदड़ के बाद हुई मौतों को सरकार ने छुपाया न होता और उसे सही रूप से प्रकट किया होता तो सरकार अपनी पारदर्शिता और निष्पक्षता का सबूत पेश करती और वह सही मायने में एक लोकतांत्रिक सरकार कहलाने की हकदार होती।

लेकिन सरकार को वह बनना नहीं हैं जो लोकतंत्र में किसी सरकार से अपेक्षा की जाती है। सरकार को वह हासिल भी नहीं करना है जो वास्तव में सनातन धर्म का मर्म है। सरकार को तो सिर्फ यही घोषणा करनी है कि हम जीत गए और बाकी लोग हार गए। रवींद्र नाथ टैगोर ने एक जगह कहा है कि सिर्फ जीतने की जिद व्यक्ति को सिकंदर, चंगेज, तैमूर और हलाकू बना देता है। वह बर्बर हो जाता है। महात्मा गांधी ने यही बात कही थी कि उन्हें असली चिंता मानव सभ्यता के बर्बरीकरण की है। वह बर्बरीकरण हमारी आंखों के सामने घटित हो रहा है। वाशिंगटन डीसी से लेकर दिल्ली और लखनऊ तक भाषा के स्तर में जो गिरावट आई है वह चिंता लायक ही नहीं है, वह बर्बरीकरण की परिचायक है।

डॉ राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि धर्म का काम है समाज में अच्छाइयों को स्थापित करना और राजनीति का काम है बुराइयों से लड़ना। इसलिए दोनों का मिलन होते रहना चाहिए क्योंकि धर्म दीर्घकालिक राजनीति है और राजनीति अल्पकालिक धर्म लेकिन यह मिलन मर्यादित तरीके से होना चाहिए। किसी एक विचार की राजनीति को दूसरे विचार की राजनीति से कभी नहीं मिलाना चाहिए बल्कि धर्म और राजनीति को अपने अपने दायरे में रहकर काम करते रहना चाहिए।

डॉ राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि धर्म का काम है समाज में अच्छाइयों को स्थापित करना और राजनीति का काम है बुराइयों से लड़ना। इसलिए दोनों का मिलन होते रहना चाहिए क्योंकि धर्म दीर्घकालिक राजनीति है और राजनीति अल्पकालिक धर्म लेकिन यह मिलन मर्यादित तरीके से होना चाहिए

तब दोनों की स्वायत्तता भी रहती है और गरिमा भी। लेकिन जब उन्हें स्वार्थी तरीके से मिलाया जाता है तो धर्म भ्रष्ट हो जाता है और राजनीति कलही हो जाती है। आज यही हो रहा है। न धर्म अपनी जगह पर है और न राजनीति वरना सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच इतने अमर्यादित रिश्ते न होते।

वास्तव में सत्ता में बैठे लोगों ने संवेदनशीलता और सज्जनता दोनों खो दिए हैं इसलिए उन्हें न तो रिश्तों की खूबसूरती मिल रही है और न ही पुण्य मिल रहा है और भगवान मिलने की बात तो दूर है। किसी ने कहा है कि लघुता में प्रभुता मिले प्रभुता से प्रभु दूर, चींटी लै शक्कर चली हाथी के सिर धूल। ईसा मसीह ने भी कहा है कि सुई की नोंक से ऊंट बाहर जा सकता है लेकिन अहंकारी व्यक्ति को भगवान के दर्शन कभी नहीं हो सकते। इसलिए भक्त अगर अपने को सत्य से बड़ा समझने लगे तो वह भगवान से दूर होता चला जाता है।

वास्तव में योगी जी ने जिस तरह से गिद्ध और सूअर के रूपक का प्रयोग किया वह न तो मिथकों के अनुरूप है, न ही भारतीय दर्शन की तत्त्व मीमांशा के अनुकूल है और न ही उनके अपने आचरण के अनुरूप क्योंकि भारतीय मिथकों में और पौराणिक कथाओं में तो गिद्ध और सूअर को दैवत्य और ईश्वरत्व का दर्जा दिया गया है। आखिर गिद्धराज जटायु ने जिस तरह से सीता को बचाने के लिए रावण से लड़ने का प्रयास किया और अपनी जान दे दी और उनके भाई संपाती ने जिस तरह अपनी गिद्ध दृष्टि का प्रयोग करके सीता की खोज करने में निराश वानरों की मदद की वह तो उन्हें प्रभु के निकटस्थ स्थापित कर देता है। फिर गिद्ध बुरे कैसे हुए।

अगर गिद्ध बुरे होते तो योगी ने स्वयं गोरखपुर में जटायु अभयारण्य स्थापित करके गिद्धों को बचाने का अभियान क्यों शुरू किया होता। जटायु के बारे में हमारे एक मित्र कहा करते हैं कि उसने तो त्याग, बलिदान और साहस का अप्रतिम नमूना प्रस्तुत किया। क्योंकि गिद्ध आसमान में विचरण करता है, मरा हुआ मांस खाता है।

उसका धरती के लोगों के साथ कोई स्वार्थ भी नहीं मिलता लेकिन जटायु ने संसार के सबसे ताकतवर व्यक्ति रावण या सबसे ताकतवर बुराई से लड़ने का साहस दिखाया।

जहां तक सूअर की बात है तो हमारे मिथकों में बाराह अवतार की कथा है। जब प्रलय आया और पृथ्वी डूबने लगी तो भगवान ने बाराह अवतार लेकर उसे बचाया। यह कथा संदेश देती है कि प्रकृति में हर जीव का महत्त्व है और सृष्टि को संभालने और बचाने में उसकी भूमिका है। बाराह के थूथन पर पृथ्वी को टिका हुआ चित्र हम सब ने देखा होगा। फिर बाराह अवमानना का प्रतीक कैसे हुआ। जाहिर सी बात है कि प्रकृति में किसी जीव को रूपक बनाकर मनुष्य और अपने प्रतिद्वंद्वी को गाली देने की जो संस्कृति विकसित हुई है वह वसुधैव कुटुंबकम की संस्कृति के एकदम विपरीत है।

भारतीय दर्शन की और गहराई में जाएंगे तो पाएंगे कि वहां बहुत खुलापन और चिंतन की पराकाष्ठा है। अगर हम सब पंडित जवाहर लाल नेहरू की रचना पर आधारित श्याम बेनेगल के धारावाहिक भारत एक खोज का स्मरण करेंगे तो पाएंगे कि उसका थीम सांग बहुत प्रेरक है। वह कहता हैः—

सृष्टि से पहले सत नहीं था
असत् भी नहीं था
अंतरिक्ष भी नहीं था
छिपा था क्या कहां
किसने ढका था उस पल को
अगम अतल जल भी कहां था
सृष्टि का कौन है कर्ता
कर्ता है या अकर्ता
नहीं किसी को पता
नहीं है पता

दरअसल हमारा सनातन धर्म अब्राहमिक धर्मों और दर्शनों के विपरीत यह मानता ही नहीं कि इस सृष्टि को किसी ईश्वर ने रचा है। ऋग्वेद में वर्णित श्लोक का अनुवाद है ऊपर दिया गया वसंत देव द्वारा रचित काव्य। ऋग्वेद की यही धारणा है कि इस सृष्टि की उत्पत्ति पंचमहाभूतों से हुई है। पंच महाभूत यानी क्षिति, जल, पावक, आकाश और वायु। जिसे तुलसीदास कहते हैं—क्षिति जल पावक गगन समीरा पंच रचित यह अधम सरीरा।

इसलिए कहीं ईश्वर हैं जिसने इस सृष्टि को बनाया है ऐसा भारतीय दर्शन का मानना नहीं है। यह सृष्टि अकस्मात ही प्रकट हुई है और उसके प्रकट होने के बाद जो नियम इस सृष्टि को चला रहा है वह है ऋत। वही ऋत महात्मा गांधी के लिए सत्य है और वही सामान्य जन के रूपक में ईश्वर है, भगवान है। वही ऋत का नियम यह बताता है कि सारी सृष्टि में एकत्व का भाव है। कोई जीव जन्तु अलग है ही नहीं। सब एक दूसरे से गुंथे हुए हैं। इसी बात को किसी शायर ने कहा है---यारों हम सब बंधे हुए हैं, कायनात के टुकड़े हैं, इक फूल को जुंबिश दोगे इक तारा कांप उठेगा। शायद हमारे आज के राजनेता धर्म के उस

फोटो स्रोत : गूगल

फोटो स्रोत : गूगल

दर्शन को समझते नहीं हैं या फिर समझ कर समझाना नहीं चाहते हैं। विनोबा ने तो कहा है कि धर्म और राजनीति का संगठित रूप समाज को बहुत नुकसान पहुंचा रहा है। हमें वह नहीं चाहिए। हमें तो धर्म से अध्यात्म चाहिए और विज्ञान चाहिए क्योंकि आज विज्ञान का युग है। इसीलिए वे भक्तिभाव या दास्य भाव के बजाय साख्यभाव की बात करते हैं।

उनके लिए ईश्वर भी सखा ही है। जो प्रतिद्वंदी है वह भी सखा ही है। वेदों का चालीस साल तक अध्ययन करने वाले विनोबा को परायापन भाता ही नहीं था। वे तो जयहिंद भी नहीं कहते थे। वे तो जयजगत कहते थे। उन्हें इकबाल के उस तराने पर भी आपत्ति थी जिसमें कहा गया है कि सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा। उनका कहना था कि क्या दुनिया के देश बुरे हैं।

इसलिए जहां सत्ता और परायापन जीवन मूल्य बन जाए वहां राजनेता ऐसी ही भाषा बोलते हैं। ऐसी भाषा तब भी बोली जाती है जब राजनीति में शिक्षण और प्रशिक्षण की धारा सूख जाती है। जब राजनीति सिर्फ बूथ मैनेज करने और चुनाव जीतने के लिए धन जुटाते रहने में लगी रहती है और प्रतिपक्षी की बात सुनने के बजाय उसका मजाक उड़ाने और उसे नीचा दिखाने में लगी रहती है।

यही कारण है कि जिस विधानसभा में कभी आचार्य नरेंद्र देव जैसा विद्वान और बहुभाषाविद बैठता था और जिस प्रदेश के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर संपूर्णानंद जैसे विद्वान विराजमान होते हों जो कि प्रशासकीय कामों के बजाय पढ़ने को प्राथमिकता देते हों वहां आज ऐसे राजनेता विराजमान हैं जो पहले हिंदू और मुस्लिम का परायापन पैदा करते हैं फिर हिंदू बनाम हिंदू का विवाद चलाते हैं। फिर देश और प्रदेश की एक खूबसूरत भाषा को कठमुल्लों की भाषा कहते हैं।

आज उत्तर प्रदेश अपनी सरकार के नेतृत्व के कारण ऐसी स्थिति में पहुंच गया है जहां धूमिल की यह कविता एकदम सटीक बैठती हैः—

अंत में कहूंगा
सिर्फ इतना कहूंगा
हां मैं कवि हूं
कवि याने भाषा में भदेस हूं
इस कदर कायर हूं कि
उत्तर प्रदेश हूं

वास्तव में कुंभ का होना बुरा नहीं है क्योंकि हमें अपनी नदियों और पर्वतों और वनों की रक्षा करनी ही चाहिए। वे हमें जीवन देते हैं और इस सृष्टि के उन सूअरों और गिद्धों को भी जीवन देते हैं जो हमें स्वच्छता सिखाते हैं और हमारे लिए कोई भुगतान लिए बिना सफाई करते रहते हैं। मुक्तिबोध ने कहा ही है किः—

जो कुछ है उससे बेहतर चाहिए
इस दुनिया को साफ करने के लिए
एक मेहतर चाहिए।

कुंभ के बहाने अगर उपभोक्तावादी संस्कृति से तारी होता परायापन टूटता है और प्रकृति के प्रति एकत्व का भाव विकसित होता है तो बुरा नहीं है। लेकिन वहां अमृत वर्षा होना और गतानुगतिकोलोकः की तरह से टूट पड़ना बुरा है। बुरा है प्रदूषण की सही जानकारी न देना और इतनी बड़ी आबादी को आमंत्रित करके पुण्य लाभ के बहाने उसे जाम और भगदड़ में फंसा देना। किसी भी राजनीति और धर्म का उद्देश्य है समाज में विवेक जागृत करना न कि उसे शून्य कर देना। सरकार ने समाज को विवेकवान बनाने के बजाय भक्तों की भीड़ में बदल दिया। और नदियों की उस समदृष्टि का भी उल्लंघन किया जिसके तहत गंगा के समक्ष न कोई हिंदू होता है न कोई मुसलमान, न कोई अमीर होता है और न कोई गरीब। सभी उसके जल से आचमन करने वजू करने के लिए आमंत्रित हैं। सभी स्वतंत्र हैं। कम से कम गंगा छुआछूत और धार्मिक भेदभाव नहीं करती। कहा ही गया है कि सुरसरि सम सबकै हित होई।

लेकिन इस सरकार ने वीआईपी धर्म शुरू करके हमारे संविधान में वर्णित समता के भाव का अपमान किया है। इतना ही नहीं गंगा का भी अपमान किया है।

भारत में इस्लाम के आने और उसकी गंगा जमुनी संस्कृति के दर्शन तो संगम पर ही होते हैं। वहां मुसलमानों को आने से रोक कर अच्छा नहीं किया गया। हमने छोटापन का प्रदर्शन किया जबकि उन्होंने भीड़ और भगदड़ में परेशान लोगों को अपने घरों में पनाह दी। वह उनका बड़प्पन था। उसी बड़प्पन और साझेपन का जिक्र 1940 में कांग्रेस अधिवेशन में मौलाना आजाद ने किया था---

हिंदुस्तान के लिए कुदरत का फैसला हो चुका था कि उसकी धरती पर इंसान की विभिन्न नस्लें, विभिन्न संस्कृतियां और धार्मिक समुदाय रहेंगे। इतिहास का भोर भी नहीं

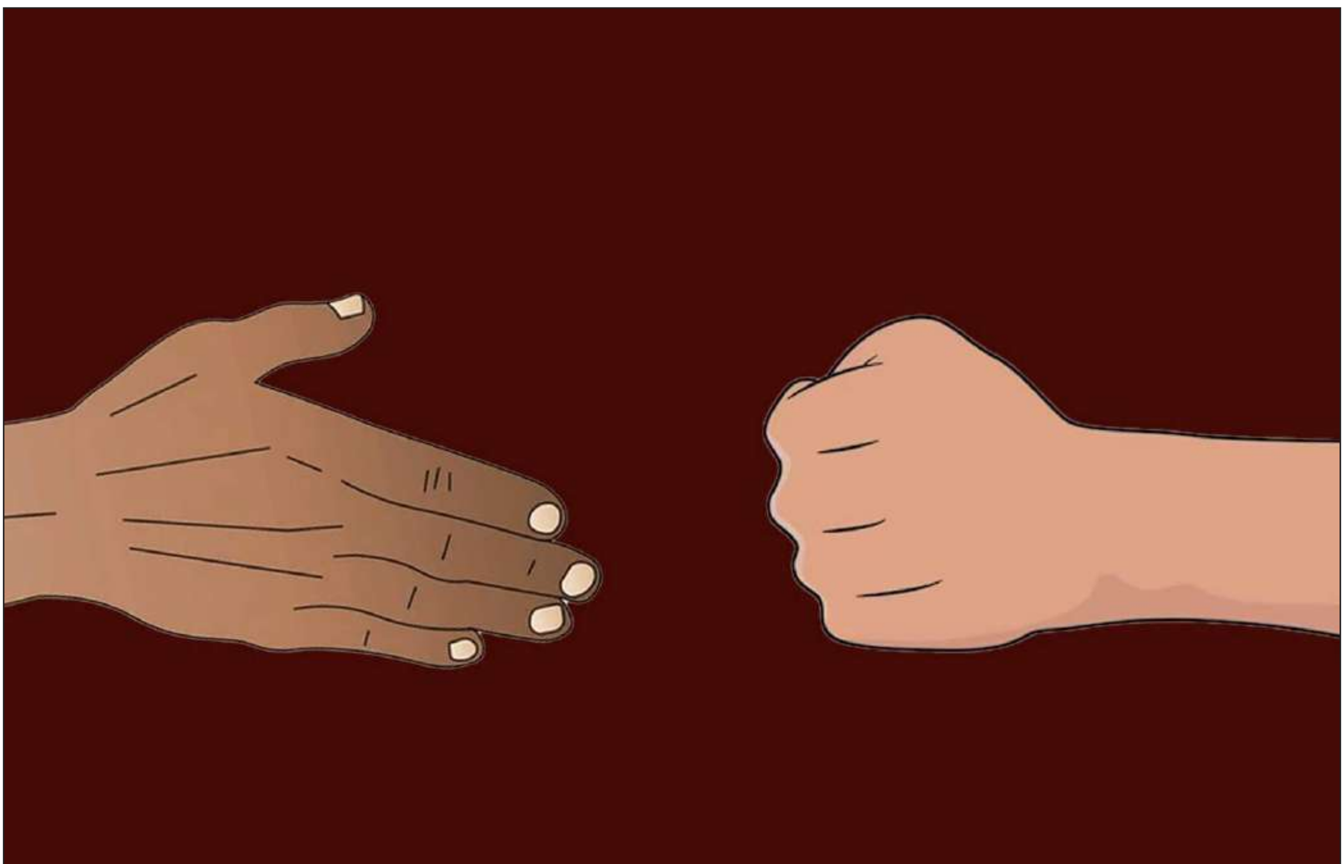

फोटो स्रोत : गूगल

हुआ था कि इन समुदायों का आगमन शुरू हो गया और एक के बाद एक सिलसिला जारी रहा। इसकी विशाल धरती सबका स्वागत करती रही और जिसकी ममतामयी गोद ने सबके लिए जगह निकाली। इन्हीं काफिलों में एक आखिरी काफिला इस्लाम के अनुयायियों का था। यह भी पिछले काफिलों के पदचिह्नों पर चलता हुआ यहां पहुंचा और हमेशा के लिए बस गया।

यह दुनिया की दो भिन्न जातियों और संस्कृतियों की धाराओं का संगम था। ये गंगा जमुना की धाराओं की तरह पहले एक दूसरे से अलग अलग बहते रहे फिर जैसा कि प्रकृति का नियम है दोनों को संगम में मिल जाना पड़ा। इन दोनों का मेल इतिहास की महान घटना थी। जिस दिन से यह घटना अस्तित्व में आई उसी दिन से प्रकृति के अदृश्य हाथों ने पुराने हिंदुस्तान की जगह एक नए हिंदुस्तान को ढालने का काम शुरू कर दिया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद की इस खूबसूरत भावना का मजाक उड़ाना न तो इस देश के लिए बेहतर है न ही इस संस्कृति के लिए। ऐसा करना गंगा और जमुना के संगम को अलग करना है और बाजार और वीआईपी के लिए अलग जल का प्रबंध करना अलग टेंट लगवाना और अलग डुबकी लगवाना है। ऐसी डुबकी लगाने से समाज को पुण्य लाभ नहीं मिलता बल्कि उसकी चेतना डूबती है। समाज अगर नहाने के बाद ज्यादा पुण्य पाया होता और ज्यादा धार्मिक हुआ होता तो मुख्यमंत्री किसी सामान्य फेसबुकिया की सलाह पर वैसा बयान न देते जैसा विधानसभा में दिया।

बल्कि कुंभ आयोजन के बाद ज्यादा विनम्रतापूर्वक अपने विपक्षी की बात सुनते। तुलसी ने लिखा है --- बरसहिं जलधि भूमि नियराई, यथा नवहिं बुधि विद्या पाई। यही नम्रता और संगम हमारी संस्कृति है न कि उससे दूर जाना। और यह संस्कृति किसी के प्रति अवमानना नहीं बल्कि आदर की भावना प्रदान करती है।

सपा के तेवरों से सरकार बैकफुट पर

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश विधानसभा में उर्दू भाषा व नेताजी मुलायम सिंह यादव पर सत्ता पक्ष द्वारा की गई आपत्तिजनक टिप्पणियों का समाजवादी पार्टी के विधायकों ने भारी विरोध किया। नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय समेत समाजवादी पार्टी के सभी सदस्यों ने कड़ा विरोध जताया।

समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने अमर्यादित टिप्पणी को कार्यवाही से निकालने की मांग की। समाजवादी पार्टी के भारी विरोध के कारण विधानसभा की कार्यवाही नहीं चल सकी। चूंकि भाजपा ने अमर्यादित व गलत टिप्पणी की थी इसलिए वह विपक्ष के भारी विरोध का सामना नहीं कर पाई।

18 फरवरी से 5 मार्च 2025 तक विधानमंडल का बजट सत्र आहूत किया गया था। भाजपा सरकार विधानसभा की कार्यवाही को हिंदी के साथ-साथ अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेली और अंग्रेजी में भी करने का प्रस्ताव लेकर आई थी। सरकार ने सदन में प्रस्ताव रखा। समाजवादी पार्टी के विधायकों ने अंग्रेजी में कार्यवाही को लेकर ऐतराज जताया और नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय ने अंग्रेजी को हटाने के साथ ही उर्दू भाषा को भी शामिल करने की वकालत कर दी।

उर्दू भाषा को इसमें शामिल करने की मांग से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ खासे नाराज हो गए और उन्होंने उर्दू को एक खास समुदाय से जोड़ते हुए अमर्यादित टिप्पणी कर दी। उन्होंने कहा कि उर्दू पढ़ाकर आप लोग मौलवी बनाना चाहते हैं और देश को कठमुल्लापन की ओर ले जाना चाहते है।

जिस पर समाजवादी पार्टी ने विरोध करते हुए कहा कि कठमुल्ले शब्द का इस्तेमाल एक खास समुदाय को निशाने पर लेकर किया गया है जो बर्दाश्त नहीं होगा। सपा विधायकों ने कहा कि देश संविधान से चलेगा न कि भाजपा की संकीर्ण मानसिकता या उसके विचारों से। समाजवादी पार्टी के सभी विधायक विरोध करते हुए आसन के सामने आ गए। उन्होंने सत्तापक्ष के रवैए का कड़ा विरोध किया। समाजवादी पार्टी के विधायकों ने कहा कि उर्दू भाषा को लेकर मुख्यमंत्री की सोच संकीर्ण है और वह एक खास समुदाय को निशाने पर रखकर इस तरह की टिप्पणी कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी के विधायकों के कड़े विरोध से मुख्यमंत्री व पूरी सरकार निरुत्तर हो गई।

बाद में सदन में ही उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी मुलायम सिंह यादव पर अमर्यादित टिप्पणी कर दी जिसपर भी सपा ने भारी विरोध किया।

अखिलेश के लिए

काशी से गंगाजल कश्मीर से आई टोपी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि गंगा के निर्मल प्रवाह के साथ शांति एवं सद्भावना बनी रहे, जीवन में शुचिता हो यही आज के दिन का संदेश है।

श्री यादव ने 26 फरवरी को यह विचार तब व्यक्त किए जब महाशिवरात्रि के अवसर पर वाराणसी के डा हेमंत कुमार ने दशाश्वमेघघाट, वाराणसी से लाकर गंगाजल का कलश श्री अखिलेश यादव को भेंट किया।

26 फरवरी को ही प्रवक्ता डा आशुतोष वर्मा ने ग्रीस के एथेंस शहर के प्राचीन दार्शनिक 'प्लेटो' की मूर्ति समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को भेंट की। डा वर्मा ने एथेंस से लौटने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में मुलाकात कर यह उपहार भेंट किया। स्मरणीय है 'प्लेटो' ने लोकतंत्र को परिभाषित किया और जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

वहीं, 24 फरवरी को जम्मू-कश्मीर के वरिष्ठ नेता एवं प्रखर समाजवादी महानायक डॉ राम मनोहर लोहिया एवं समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेता श्री मुलायम सिंह यादव के विचारों से जुड़े रहे डॉ अयाज अहमद बट्ट ने समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से मुलाकात कर उन्हें कश्मीर की खास टोपी भेंट की तथा जम्मू-कश्मीर यात्रा का निमंत्रण दिया।

इस अवसर पर डॉ अयाज अहमद बट्ट ने कहा कि श्री अखिलेश यादव के प्रति कश्मीर के लोगों का बहुत भरोसा है कि वही देश-प्रदेश में बदलाव ला सकते हैं। उनके विचार सकारात्मक और उनका विजन बहुत विस्तृत है। उन्होंने कहा कि श्री अखिलेश यादव कश्मीर के लोगों और खासकर नौजवानों में बहुत लोकप्रिय हैं। उन्होंने बताया कि कश्मीर में समाजवादी पार्टी के लिए काफी राजनैतिक संभावनाएं हैं।

सपा ही लड़ती है सामाजिक न्याय की लड़ाई

- अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

चौरसिया समाज के अग्रणी नेता श्री शिवदयाल चौरसिया एडवोकेट की 122 वीं जयंती 13 मार्च को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में सादगी के साथ मनाई गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में चौरसिया समाज के लोग मौजूद थे।

श्री शिवदयाल चौरसिया के चित्र पर माल्यार्पण के पश्चात् समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चौरसिया समाज का पांच हजार वर्ष का इतिहास है। उन्होने शिवदयाल जी को याद करते हुए कहा कि उन्होंने वंचितो की लड़ाई लड़ी। उनमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर भागीदारी की चेतना जगाई थी। उनके रास्ते पर चलकर पिछड़ों को न्याय दिलाने की लड़ाई जीती जाएगी। बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर से भी उनके निकट संपर्क थे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि पिछड़े वर्ग की सामाजिक न्याय की लड़ाई समाजवादी पार्टी लड़ती है। पेरियार, डा. लोहिया और नेता जी श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में यह लड़ाई शुरू हुई। उन्होंने कहा कि पान विक्रेताओं के लाभ के लिए एक फ्री बस चलाई थी। चन्दौली, वाराणसी में दूध का कारोबार होता है उनके लिए विशेष बस चलाई थी। समाजवादी पार्टी पान को खेती का दर्जा दिलाएगी और चौरसिया समाज को पूरा सम्मान दिया जाएगा।

श्री यादव ने कहा चौरसिया समाज ने तय किया है कि पान पर चर्चा होगी, पान की खेती, पान की खरीद और उससे जुड़ी समस्याओं पर बात होगी। समाजवादी सरकार बनते ही रिवरफ्रन्ट पर शिवदयाल जी की याद में स्मारक बनाकर उन्हें सम्मान देगी। श्री यादव ने कहा कि जातीय जनगणना होने पर आबादी के हिसाब से सभी को हक और सम्मान मिलेगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमें बदनाम करने का षड्यंत्र भाजपा कर रही है। ऐसी ताकतों से सावधान रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा राज में चौरसिया

समाज के दो दर्जन से ज्यादा निर्दोषों की हत्या हुई है। चौरसिया समाज ने एक स्वर में संकल्प लिया कि उनका एक-एक वोट समाजवादी पार्टी के चुनाव चिन्ह साइकिल पर देकर सामाजिक न्याय की सरकार श्री अखिलेश यादव के मुख्यमंत्रित्व में बनाएंगे, उन्हें विश्वास है कि तभी पीडीए सरकार में सभी को हिस्सेदारी और सम्मान मिलेगा। श्री अखिलेश यादव को इस अवसर पर अनेक प्रतीक चिन्ह देकर एवं अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया।

चौरसिया समाज के कार्यक्रम में आयोजक श्री राम लखन चौरसिया डा. अजय चौरसिया प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी, आरके चौधरी सांसद, राजेन्द्र चौधरी पूर्व कैबिनेट मंत्री, समाजवादी पार्टी, रामअचल राजभर, विधायक, दीपक चौरसिया सुपौत्र स्व. शिवदयाल चौरसिया, कृष्ण कन्हैया पाल अध्यक्ष समाजवादी अधिवक्ता सभा आदि भी मौजूद थे।

अखिलेश को मिल रहा भारी जनसमर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की लोकप्रियता में दिनों-दिन इजाफा हो रहा है। जिलों के दौरों के दौरान उमड़ रही भीड़ गवाही दे रहा है कि 2027 में श्री अखिलेश यादव की सरकार आने वाली है क्योंकि जनता भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए कमर कस चुकी है।

हाल के दिनों में सहारनपुर, कानपुर व कन्नौज आदि जिलों के दौरों के दौरान श्री अखिलेश यादव की झलक पाने के लिए जिस तरह जन सैलाब उमड़ा, उसने यह संदेश दे दिया कि श्री अखिलेश यादव पर जनता का विश्वास बढ़ा है। दौरों में श्री अखिलेश यादव के वक्तव्य, उनकी तर्कशीलता और सभी से समान भाव से आचरण आमजन को भा रहा है।

19 फरवरी को श्री अखिलेश यादव सहारनपुर के दौरे पर थे। वह एक कार्यक्रम में शिरकत के लिए पहुंचे थे। उनके कार्यक्रम की सूचना मात्र से ही भारी जनसैलाब उनके स्वागत में उमड़ पड़ा। श्री अखिलेश यादव के पहुंचते ही उनके जयकारे से समर्थन का समां बंध गया। युवा उनके साथ फोटो खिंचवाने के लिए बेताब दिखे। महिलाओं और बुजुर्गों ने भी श्री अखिलेश यादव का स्वागत किया। श्री अखिलेश यादव ने सभी को विश्वास दिलाया कि वह समाज के हित के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

23 फरवरी को श्री अखिलेश यादव कानपुर में एक कार्यक्रम में शिरकत के लिए पहुंचे तो वहां भी उनकी झलक पाने के लिए जनसमूह उमड़ पड़ा। अखिलेश यादव जिंदाबाद के नारों से वातावरण गुंजायमान हो गया। यहां पत्रकारों के सवालों के जवाब में श्री यादव ने कहा कि मैं कन्नौज में एक मंदिर में गया था, मेरे वहां से जाने के बाद भाजपा के लोगों ने मंदिर को गंगा जल से धोया था। मुख्यमंत्री

आवास में कई मुख्यमंत्री रहे। आये, गए लेकिन किसी ने उसे गंगा जल से नहीं धुलवाया था लेकिन मेरे मुख्यमंत्री आवास छोड़ने के बाद भाजपा के लोगों ने मुख्यमंत्री आवास को गंगा जल से धुलवाया। महाकुंभ में मैने गंगा जी में स्नान कर लिया है तो अब भाजपा के लोग बताएं कि मां गंगा को किससे और कैसे धोएंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लड़ाई बड़ी है। भाजपा पीडीए की उपेक्षा करती है। भाजपा सरकार ने पिछले 9 बजट में पीडीए को कुछ नहीं दिया है। बाबा साहब डॉ अंबेडकर ने संविधान के माध्यम से पीडीए को हक और सम्मान दिया है। आरक्षण दिया है। भाजपा उस आरक्षण को छीन रही है। विश्वविद्यालयों में कहीं भी पीडीए नहीं दिखाई दे रहा है।

उन्होंने कहा कि भाजपा पीडीए के साथ भेदभाव कर रही है। कानपुर में विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में पीडीए समाज का कोई कुलपति तैनात नहीं है। संस्थाओं के शीर्ष पदों को छोड़िए उनके नीचे नौकरियों और अन्य पदों पर भी पीडीए परिवार को हिस्सा नहीं मिला है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि पीडीए के लोगों ने इस बार भाजपा को हराने का मन बना लिया है। उपचुनाव में भाजपा ने जो चार सौ बीसी की है वह 2027 के विधानसभा के आम चुनाव में नहीं चलेगी। 2027 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की गलत नीतियों से व्यापारी और व्यापार तबाह हो रहा है। कानपुर के लोगों और व्यापारियों ने अपनी मेहनत से व्यापार में एक स्थान बनाया लेकिन दस साल की भाजपा सरकार में कानपुर के लोगों ने सब कुछ देख लिया। भाजपा की सरकार, सांसद, विधायक और स्पीकर भी देख लिया। कानपुर में गंगा जी की हालत वैसी ही है, सफाई नहीं हुई। भाजपा सरकार किसी संस्था को नहीं मानती है। गंगा जी के जल की गुणवत्ता को लेकर प्रदेश और केन्द्र सरकार की संस्थाओं में झगड़ा है।

श्री यादव ने कहा कि समाजवादी चाहते हैं कि कानपुर के उद्योग धंधे, कारखाने चलें। कानपुर का नाम व प्रतिष्ठा वापस आए। कानपुर लोगों को नौकरी, रोजगार देता था। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाता था। भाजपा सरकार कानपुर की उपेक्षा कर रही है। इस बजट में भी भाजपा सरकार ने कानपुर की उपेक्षा की।

25 फरवरी को श्री अखिलेश यादव कन्नौज में थे। यह उनकी विशेषता भी है कि वह कन्नौज से अपने रिश्ते को हमेशा बनाए रहते हैं। यूं कहें कि कन्नौज श्री अखिलेश यादव के

दिल में बसा हुआ है। वह कन्नौज के विकास के लिए पहले भी प्रयासरत रहते थे और उन्होंने कन्नौज के इत्र की खुशबू दुनियाभर में बिखेरने के लिए कई उल्लेखनीय काम किए हैं। अब वह बतौर सांसद फिर कन्नौज के विकास की नई इबारत लिखने और उसे ऊंचाइयां देने का तानाबाना बुनने में दिनरात एक किए हुए हैं।

श्री यादव के कन्नौज पहुंचते ही भारी भीड़ जुट गई। अखिलेश यादव जिंदाबाद और अखिलेश तुम संघर्ष करो, कन्नौज साथ है जैसे नारों ने समाजवादी पार्टी के साथियों को ताकत दी। यहां भी श्री अखिलेश यादव से हाथ मिलाने व उनके साथ फोटो खिंचवाने वालों की होड़ लग गई। श्री यादव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अखिलेश जी उत्तराखंड के हर सुख-दुःख में साथ

राजेन्द्र चौधरी

उत्तर प्रदेश से अलग उत्तराखंड राज्य बनने के बावजूद भी दोनों राज्यों के बीच भावनात्मक रिश्ता अटूट है। यह रिश्ता हमेशा बना भी रहेगा। उत्तराखंड राज्य जब बना तब विकास और समृद्धि के सपने देखे गए थे। भाजपा-कांग्रेस ने सत्ता का दुरुपयोग कर उन्हें चकनाचूर कर दिया। प्राकृतिक संपदा से समृद्ध प्रदेश आज विकास विरोधी नीतियों के चलते प्राकृतिक प्रकोप से कराह रहा है।

उत्तराखंड में पहाड़ कमजोर होने से जब तब आपदाएं आती रहती हैं। पहाड़ की संवेदनशीलता की उपेक्षा कर विकास के नाम पर खिलवाड़ के गंभीर परिणाम सामने आते हैं। फिर भी उनकी अनदेखी की जाती है। उत्तराखंड की सभी सरकारें आपदाओं से निपटने में असफल क्यों रहती हैं? वैसे हर आपदा के वक्त उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव उत्तराखंड में मदद का हाथ बढ़ाने में आगे रहे हैं। अखिलेश जी उत्तराखंडवासियों के हर सुख-दुःख में साथी हैं।

अभी पिछले दिनों चमोली में बीआरओ के कैंप पर ग्लेशियर टूटने से वहां मौजूद मजदूर फंस गए। कुछ की दर्दनाक मौतें हो गईं। कई अन्य घायल हुए। समाजवादी पार्टी ने मृतक परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और उन्हें पर्याप्त मुआवजा दिए जाने की भी मांग की।

7 फरवरी 2021 को तपोवन बैराज में एनटीपीसी के 150 से अधिक मजदूरों द्वारा कार्य किया जा रहा था, अचानक एक ग्लेशियर टूटा। एनटीपीसी के कार्यरत मजदूर मलबे में फंस गए। तभी एक ग्रामीण महिला श्रीमती मांगेश्री डांक गांव निवासिनी ने ग्लेशियर टूटने की सूचना दी क्योंकि उनका बेटा विपुल भी उसमें फंसा था। श्रीमती मांगेश्री की सूझबूझ से 40 मजदूरों की जान बची थी।

श्री अखिलेश यादव की ओर से श्रीमती मांगेश्री को तात्कालिक समझ और साहसपूर्ण कार्य के लिए 5 लाख रुपये से सम्मानित किया गया था। श्रीमती मांगेश्री का डांक गांव बद्रीनाथ विधानसभा क्षेत्र की रैनी गांव के निकट है जो श्रीमती गौरा देवी के नेतृत्व में चिपको आंदोलन के लिए विख्यात रहा है। श्री अखिलेश यादव ने मातृशक्ति का इस तरह वंदन किया था।

सन् 1974 में जंगलों में कटान रोकने के लिए गौरा देवी के साथ महिलाएं पेड़ों से चिपक गई थीं। ठेकेदारों को वापस जाना पड़ा। देवभूमि में नशे के व्यापक प्रसार के चलते जीवन अव्यवस्थित होने के कारण उत्तराखंड में नशे के खिलाफ 1960 के बाद गढ़वाल, कुमायूं क्षेत्र में महिलाएं लामबंद हुई थीं। इसमें गांधी जी की विदेशी शिष्या

फोटो स्रोत : गूगल

सरला बहन की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इन आंदोलनों से पर्यावरण के प्रति व्यापक जन जागरूकता का प्रसार हुआ था।

एक वर्ष पूर्व भी उत्तर प्रदेश और दिल्ली के रैट माइनर्स ने सुरंग में फंसे लोगों की जान बचाई थी। तब भी समाजवादी पार्टी की ओर से श्री अखिलेश यादव ने उन माइनर्स को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में सम्मानित किया था। सन 2013 में जब केदारनाथ में भयंकर तबाही हुई थी तब भी उत्तर प्रदेश की समाजवादी सरकार और तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की ओर से आर्थिक सहायता के साथ बसों से लोगों को निकालने की व्यवस्था की गई थी। समाजवादी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं की टीम ने राहत कार्यों में मदद की थी। सहारनपुर के डीएम को भी मदद के लिए लगाया गया था।

समाजवादी पार्टी ने मांग की है कि उत्तराखंड में जितनी भी परियोजनाएं चल रही हैं उनकी एनवायरमेंट इम्पैक्ट असेसमेंट की रिपोर्ट को गंभीरता से स्टडी करके ही प्रारम्भ करें। उत्तराखंड के विकास और पर्यावरणीय सुरक्षा के प्रति भाजपा सरकार गंभीरता से काम क्यों नहीं करती है? भाजपा की कथित विकास नीतियां विनाशपरक हैं और पूंजीघरानों की पोषक हैं।

उत्तराखंड में आज भी किसान, गरीब, नौजवान, व्यापारी, महिलाएं सभी परेशानी में जिंदगी बसर कर रहे हैं। सरकारी विभागों में लूटखसोट बड़े पैमाने पर जारी है। पर्वतीय क्षेत्र में रोजगार के अवसर सृजित नहीं हुए। वहां पर्याप्त कुटीर उद्योग तक नहीं लगा। सेना भर्ती में भी नौजवानों की रुचि चार साला अग्निवीर योजना के चलते नहीं रही है। भूमि सुधार की दशा में भी कुछ नहीं हुआ। वन भूमि, नजूल भूमि में बसे परिवारों की दशा दयनीय है। गांवों से पलायन हो रहा है। उत्तराखंड में डबल इंजन सरकार का कोई फायदा नहीं है। नदियां प्रदूषित हैं। पर्यावरण संरक्षण एवं वन्य जीव संरक्षण की दिशा में कोई प्रयास नहीं हो रहे हैं। पर्यटन उद्योग में बहुत संभावनाएं हैं परन्तु कोई सुनियोजित योजना नहीं है। महिलाओं का उत्पीड़न चरम पर है। जनता को मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखना उत्तराखंड सरकार की विफलता है।

भाजपा वस्तुतः विकास का सही अर्थ अभी तक क्यों नहीं समझ सकी है? उत्तराखंड देवभूमि है। केदारनाथ-बद्रीनाथ, गंगोत्री-यमुनोत्री चार धाम जैसे अनेक श्रद्धा के स्थल हैं। वहां परंपरा की प्रतिष्ठा के साथ प्रगति हो यह जरूरी है पर प्रगति में मानवीय संवेदनाओं के साथ पर्वतीय अस्मिता की रक्षा प्रमुखता से होनी चाहिए। भाजपा का विकास लूट और झूठ का पर्याय है, उत्तराखंड उसका ही शिकार बन गया है।

(लेखक समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव व पूर्व कैबिनेट मंत्री हैं)

महाकुंभ के आईने में समाजवादी दर्शन

जयशंकर पाण्डेय

संस्कृत का एक शब्द है कुंभ जिसका अर्थ है कलश। पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के पश्चात भगवान धनवन्तरि जब अमृत कलश लेकर प्रकट हुए तब अमृत पाने के लिए देवताओं और असुरों में युद्ध छिड़ गया। उस छीनाझपटी में अमृत कलश की कुछ बूंदें धरती पर पवित्र नदियों के किनारे प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक में छलक गईं।

जिन स्थानों पर अमृत कलश से पवित्र नदियों के किनारे बूंदे गिरीं वहीं पर महाकुंभ का आयोजन होता है। जनश्रुति के अनुसार जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की तो पहला यज्ञ प्रयाग में किया। इसलिए प्रा और यज्ञ दोनों को मिलाकर इसका नाम प्रयाग रखा गया और एक लोकोक्ति के अनुसार महाकुंभ का आयोजन साढ़े आठ सौ वर्ष पहले आदि गुरु शंकराचार्य ने शुरू कराया था।

मुगलकाल में अकबर ने प्रयाग का नाम बदलकर इलाहाबाद रखा और गंगा नदी के किनारे विख्यात किले का निर्माण कराया। अंग्रेजों ने 23 सितंबर 1887 को देश के चौथे विश्वविद्यालय की स्थापना इलाहाबाद में कराई। इस तरह से इलाहाबाद इस देश की सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं न्यायाधिक गतिविधियों का हमेशा केन्द्र रहा।

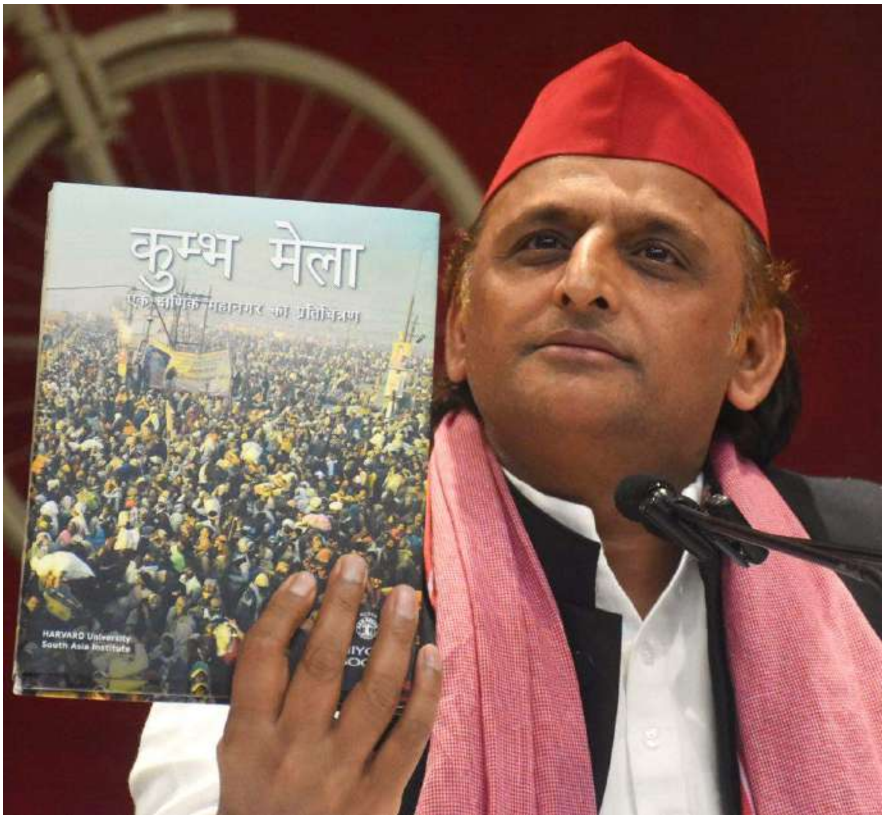

यहीं पर पहली बार डॉ. राम मनोहर लोहिया ने इस देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी के खिलाफ फूलपुर लोकसभा चुनाव 1962 ई में लड़कर समाजवादी विचारधारा के बीजों को बिखेरने का कार्य किया था। वर्ष 2006 से गंगा नदी के किनारे हर माघ मेला में प्रयागराज में समाजवादी चिंतन शिविर की शुरुआत माननीय मुलायम सिंह यादव जी के संघर्षों तथा जनेश्वर मिश्र की प्रेरणा से हुई।

तभी से चिंतन शिविर का आयोजन गंगा नदी के किनारे प्रयागराज में समाजवादी साथी कर रहे हैं। इस बार महाकुंभ में लगे इस शिविर में श्रद्धेय श्री मुलायम सिंह यादव जी की मूर्ति आयोजन स्थल पर लगाई गई जिसका अनावरण उत्तर प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता माता प्रसाद पाण्डेय जी द्वारा 11 फरवरी को किया गया।

26 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने संगम में स्नान करने के पश्चात चिंतन शिविर में माननीय मुलायम सिंह जी की मूर्ति पर माल्यार्पण

किया। उनके साथ उनके पुत्र श्री अर्जुन यादव एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं प्रवक्ता श्री राजेन्द्र चौधरी जी थे।

उल्लेखनीय है कि श्री अखिलेश यादव जी के मुख्यमंत्री कार्यकाल में वर्ष 2013 में विशाल कुंभ मेले का आयोजन हुआ था जिसमें करोड़ों लोगों ने पवित्र संगम में डुबकी लगाई थी। जिसकी देश और विदेश की सारी मीडिया ने प्रशंसा की थी। उस समय तत्कालीन नगर विकास मंत्री श्री मोहम्मद आज़म खान साहब को अच्छी व्यवस्था और गुणवत्ता के लिए साधु, संतों ने आर्शीवाद दिया था।

छोटे लोहिया के नाम से विख्यात जनेश्वर मिश्र जी ने कहा था कि समाजवाद अगर कोई सपना है तो सपना केवल किताब पर लिखने के लिए नहीं हुआ करता। समाजवाद केवल सपना नहीं समाजवाद एक आचरण है और उस आचरण को हासिल करने के लिए बहुत तपस्या करनी पड़ती है। गंगा को भी काफी तपस्या करनी पड़ी थी क्योंकि गंगा कोई बहता हुआ पानी नहीं है। गंगा एक आचरण भी है। इस गंगा नदी में यह समाजवाद है। गंगा नदी में सेठ डुबकी लगाने आए या इस गंगा नदी कोई भिखमंगा कटोरा लेकर डुबकी लगाने आए। गंगा सेठ के आने पर रुक नहीं जाएगी और भिखमंगे के आने पर भी गंगा मां नहीं कहेगी कि तुम दूर रहो और मुझे बहने दो। गंगा अपनी रफ्तार से बहती चली जाती है।

(लेखक पूर्व विधायक व समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव हैं)

भाजपा ने आस्था को व्यापार बना दिया

-अखिलेश

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि धर्म कारोबार नहीं होता है। धर्म से आस्था जुड़ी होती है। सेवा का व्यापार नही हो सकता है लेकिन भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री जी ने जनता की आस्था को व्यापार बना दिया है। दान, पुण्य, सेवा के कुंभ को मुख्यमंत्री जी ने कारोबार बना दिया। उनके लिए कुंभ तीन लाख करोड़ का कारोबार बन गया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने धर्म, आस्था, और सेवा के महापर्व महाकुंभ की पवित्र भावना को ठेस पहुंचाते हुए राजनीतिक अवसरवाद तलाशने का काम किया। महाकुंभ में हर तरफ अव्यवस्थाओं का बोलबाला रहा। कुंभ को असत्य प्रचार का माध्यम बनाकर करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं से खिलवाड़ किया और राजनीतिक हितपूर्ति में इस्तेमाल किया गया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि प्रयागराज संगम पर महाकुंभ का सदियों का पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व और इतिहास है। कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन से लेकर समाजवादी पार्टी की सरकार तक के समय 2013 में कुंभ का सफल आयोजन किया गया था।

श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में 2013 के कुंभ की व्यवस्थाओं को साधु संतों सहित पूरी दुनिया ने सराहा था। हावर्ड विश्वविद्यालय की टीम ने उस समय महाकुंभ में की गयी व्यवस्थाओं स्वच्छता, सफाई और भीड़ प्रबन्धन की व्यवस्था को आश्चर्यजनक बताते हुए सराहना की थी और उस पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की थी। 2013 में समाजवादी सरकार में आयोजित कुंभ पर न्यूयार्क में हाल ही में चर्चा और सेमिनार हुए।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि महाकुंभ को लेकर शुरू से भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री जी की नीयत में खोट था। वह धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन को राजनीतिक रंग देने में जुटे रहे। मुख्यमंत्री जी को महाकुंभ में आस्था कम व्यापार और व्यापारिक लाभ ज्यादा दिखाई दिया। वे उसी हिसाब-किताब में जुटे रहे। उन्होंने धार्मिक आयोजन की पवित्रता को नष्ट करने का पाप किया। व्यवस्थाओं, भीड़ प्रबन्धन पर कोई ध्यान नहीं दिया जिसके चलते भगदड़ हुई और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को जान गंवानी पड़ी।

सबके हमदर्द हैं अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव अपनी एक विशेषता के कारण सर्व समाज में लोकप्रिय हैं। उनकी विशेषता यह है कि वह दु:ख की घड़ी में सभी के साथ बिना किसी भेदभाव के खड़े रहते हैं। श्री यादव इतने संवेदनशील राजनेता हैं कि वह किसी का दु:ख सुनकर द्रवित हो जाते हैं और तत्काल हर संभव मदद के लिए आगे आ जाते हैं। श्री अखिलेश यादव की सर्वसमाज की मदद की भावना की वजह से ही वह सबके बन गए हैं। हाल के दिनों में भी समाज में ऐसी कई घटनाएं हुईं जिसने श्री अखिलेश यादव को काफी द्रवित कर दिया और उन्होंने मदद के लिए हाथ बढ़ा दिए। पहले भी ऐसा लगातार होता रहा है कि श्री अखिलेश यादव ने दु:खी परिवारों का साथ दिया है।

25 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने विधायक अतुल प्रधान के नेतृत्व में बड़ौत में हुई दुर्घटना में मृत 9 लोगों के परिवारीजनो से भेंट की। श्री अखिलेश यादव ने सभी को दो लाख रूपए की आर्थिक सहायता की घोषणा करते हुए उनके प्रति संवेदना जताई। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी भी उपस्थित थे।

श्री अखिलेश यादव ने बड़ौत दुर्घटना के मृतकों एवं लगभग 70 गंभीर घायलों के प्रति सरकार की संवेदनहीनता पर क्षोभ जताया। उन्होंने सरकार से मृतक आश्रितों को 50 लाख रुपये के मुआवजे और घायलों की सुचारू चिकित्सा व्यवस्था व आर्थिक मदद की मांग की।

6 मार्च को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधिमंडल बागपत जनपद के बड़ौत स्थित दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर कॉलेज परिसर में हादसे में मरने वाले 9 लोगों के पीड़ित परिवारीजनों को दो-दो लाख रूपये की आर्थिक मदद का चेक देते हुए संवेदना प्रकट की।

प्रतिनिधिमंडल में मुजफ्फरनगर सांसद हरेंद्र मलिक, सरधना विधायक अतुल प्रधान, सपा राष्ट्रीय सचिव अर्पणा जैन, जिलाध्यक्ष रविंद्र देव आदि शामिल थे।

इसी तरह एक अन्य मामले में कुशीनगर जनपद के हाटा कस्बे में मदनी मस्जिद के

संस्थापक जनाब हाजी हामिद अली साहब के बड़े बेटे जनाब शाकिर अली साहब का निधन होने पर श्री अखिलेश यादव शोकाकुल हो गए। शाकिर साहब का निधन प्रशासन द्वारा मस्जिद तोड़े जाने के सदमे में हुआ।

यह खबर सुनकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने अफ़सोस करते हुए 24 फरवरी को समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश अध्यक्ष मो शकील नदवी को शोक संवेदना पत्र देकर उनके गम में शामिल होने के लिए भेजा। शकील नदवी ने घर वालों से मिलकर उन्हें यकीन दिलाया कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ पूरी समाजवादी पार्टी भी उनके गम में उनके साथ है।

इस मौके पर समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष मोहम्मद शुकुरूल्लाह अंसारी, पूर्व राज्यमंत्री मुनीर अहमद, प्रदेश सचिव समाजवादी अल्पसंख्यक सभा शाह आलम, विधानसभा हाटा के विधानसभा अध्यक्ष सचिंदर यादव आदि मौजूद रहे।

मथुरा जनपद के करनावल में दलित समाज की दोनों बेटियों मनीषा व रानी पुत्री श्री पदम सिंह की 7 मार्च को शादी होने की सूचना पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 6 मार्च को समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने ग्राम करनावल जाकर दोनों बेटियों के हाथों में 2 लाख रुपये की कन्यादान की धनराशि आशीर्वाद स्वरूप भेंट की। दो दिन पूर्व जिला समाजवादी पार्टी द्वारा घोषित 51 हजार रुपए की धनराशि भी परिवार को उपलब्ध कराई गई थी।

प्रतिनिधिमंडल में राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन, बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती एवं लोहिया वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ रामकरण निर्मल, प्रदेश उपाध्यक्ष सीएल वर्मा, आजाद सिंह जाटव पूर्व जिलाध्यक्ष, जिला अध्यक्ष मथुरा वीरेंद्र यादव, जिला महासचिव सुभाष पाल, जिला उपाध्यक्ष दिगंबर सिंह आदि शामिल रहे।

इस मौके पर श्री रामजीलाल सुमन ने कहा कि कुछ असामाजिक तत्व हर समाज में पैदा होते हैं उनकी वजह से किसी संपूर्ण समाज को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। समाजवादी पार्टी हमेशा समाज में सौहार्द चाहती है लेकिन कुछ राजनीतिक दल अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस भाईचारे को तोड़ना चाहते हैं।

श्री मिठाई लाल भारती ने कहा कि दलितों के साथ अत्याचार बढ़ा है। श्री रामकरन निर्मल ने कहा कि दलितों के साथ समाजवादी पार्टी ही खड़ी है। इस मौके पर मुख्य रूप से विश्व गुरु जाटव राष्ट्रीय महासचिव अंबेडकर वाहिनी, आशीष गौतम राष्ट्रीय सचिव अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ, नितिन कोहली, शालू यादव, आशीष गौतम, डॉ संतोष वर्मा आदि मौजूद थे।

आधी आबादी का
अखिलेश पर पूरा विश्वास

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की महिलाओं ने भी अब समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को 2027 में मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लिया है। प्रदेश में महिला हिंसा की बढ़ती घटनाओं से चिंतित आधी आबादी को विश्वास हो गया है कि श्री अखिलेश यादव की सरकार में ही महिलाएं सुरक्षित हैं।

श्री अखिलेश यादव की सरकार में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर अस्तित्व में आए 1090 की सक्रियता से जिस तरह महिलाओं को सुरक्षा दी गई थी, उसमें भाजपा सरकार पूरी तरह नाकाम रही है। 1090 चौपट कर दिया गया है। महिलाओं ने संकल्प लिया है कि प्रदेश के व्यापक हित में वे 2027 में फिर समाजवादी सरकार लाएंगी।

18 फरवरी को समाजवादी महिला सभा द्वारा लखनऊ के मलिहाबाद में महिला सम्मेलन आयोजित कर महिलाओं ने समाजवादी सरकार में महिला सुरक्षा को लेकर किए गए उपायों पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि तब महिलाएं पूरी तरह सुरक्षित हुआ करती थीं जबकि भाजपा राज में महिला अपराध में तेजी से इजाफा हुआ है इसलिए भाजपा को हटाना जरूरी है।

महिला सम्मेलन में मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल, विशिष्ट अतिथि सांसद आरके चौधरी रहे जबकि अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी महिला सभा श्रीमती जूही सिंह ने की। संचालन श्रीमती राजबाला रावत ने किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल ने कहा कि महिला सम्मेलन का आयोजन महिलाओं को उनके हक एवं अधिकारों के साथ ही संविधान के बारे में जानकारी देना है। भाजपा सरकार में महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित हैं।

PDA की सरकार बनी तो शुरू होगी स्त्री सम्मान समृद्धि योजना

बुलेटिन ब्यूरो

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर सभी को हार्दिक बधाई देते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने घोषणा की कि 2027 में प्रदेश में अपनी PDA की सरकार बनाएंगे और सरकार बनने पर स्त्री सम्मान समृद्धि योजना लाएंगे जिसके तहत हर बालिका, युवती, नारी को सबल बनाया जाएगा।

योजना के तहत महिलाओं के खाते में सीधे पैसे भेजे जाएंगे। महिलाओं, युवतियों को मोबाइल दिया जाएगा। प्रतिभावान छात्राओं को लैपटॉप दिया जाएगा। PDA पाठशाला चलाकर हुनर को रोजगार दिया जाएगा।

महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ने हमेशा महिला सम्मान, महिला सुरक्षा और महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी। समाजवादी पार्टी की सरकारों में महिलाओं के उत्थान और उनकी सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण योजनाएं चलाई गईं। महिला सशक्तिकरण और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए कई विशेष काम किए गए थे। बेटियों की शिक्षा मुफ्त की गई थी। छात्राओं को साइकिल, लैपटॉप, कन्या विद्या धन दिया गया था। समाजवादी सरकार में महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए समाजवादी पेंशन योजना चलाई गई थी। प्रदेश में पहली बार 55 लाख महिलाओं के खाते में सीधे पैसा ट्रांसफर किया गया था। महिला सुरक्षा के लिए वीमेन पावर लाइन 1090 सेवा शुरू की गयी थी। विधवा, वृद्धा और निराश्रित महिलाओं के लिए पेंशन में वृद्धि की गयी। श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ने महिलाओं के हर स्तर पर आगे बढ़ाने का काम किया लेकिन भाजपा ने सत्ता में आने के बाद सारी योजनाओं को रोक दिया। महिला सुरक्षा के लिए बनायी गयी 1090 सेवा को बर्बाद कर दिया। समाजवादी पेंशन योजना बंद कर दी।

श्री यादव ने कहा कि बहन-बेटियों के साथ हो रही शर्मसार करने वाली घटनाओं से भाजपा का चाल-चरित्र और चेहरा पूरी तरह से उजागर हो गया है। मातृशक्ति भाजपा सरकार में अपनी उपेक्षा और अपमान का बदला 2027 के विधानसभा चुनाव में लेने के लिए संकल्पित है।

सम्मेलन में मुख्य रूप से पूर्व सांसद सुशीला सरोज, मलिहाबाद विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी एवं प्रभारी सोनू कनौजिया, प्रदेश उपाध्यक्ष सीएल वर्मा, जिलाध्यक्ष जय सिंह 'जयन्त', उपाध्यक्ष विजयश्री गौतम, राष्ट्रीय प्रवक्ता नाहिद लारी, प्रदेश सचिव राशिद अली, ब्लाक प्रमुख चिनहट ऊषा सेन सहित हजारों की संख्या में महिलाएं एवं पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उधर 28 फरवरी को लखनऊ के गोसाईगंज में महिला सम्मेलन आयोजित कर महिलाओं ने अखिलेश सरकार बनाने का संकल्प लिया। महिला सम्मेलन में मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल, विशिष्ट अतिथि सांसद आरके चौधरी मौजूद रहे। सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला सभा श्रीमती जूही सिंह ने की। सम्मेलन का संचालन महिला सभा की जिलाध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता यादव ने किया।

महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल ने कहा कि महिला सम्मेलन का आयोजन महिलाओं को उनके हक एवं अधिकारों के साथ ही संविधान के बारे में जानकारी देना है। भाजपा सरकार में महिलाओं पर अत्याचार बढ़ा है और उन्हें उनका अधिकार नहीं मिल पा रहा है।

महिला सम्मेलन में मुख्य रूप से राष्ट्रीय प्रवक्ता नाहिद लारी, जिला अध्यक्ष जयसिंह 'जयंत' पूर्व विधायक अम्बरीश सिंह पुष्कर, पूर्व एमएलसी कांति सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महिला सभा/प्रवक्ता नेहा यादव आदि मौजूद रहीं।

सपा में शामिल होने का सिलसिला जारी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की स्पष्ट नीति, साफ-सुथरी छवि और सर्वसमाज के लिए सदैव तत्पर रहने के कारण पार्टी के प्रति दूसरे दलों में आकर्षण लगातार बढ़ रहा है। प्रदेश में समाजवादी पार्टी के पक्ष में बने माहौल के कारण अन्य राजनीतिक दलों खासतौर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता समाजवादी पार्टी में तेजी के साथ शामिल हो रहे हैं। समाजवादी पार्टी का कुनबा बढ़ता और ज्यादा मजबूत होता जा रहा है।

28 फरवरी को समाजवादी पार्टी की नीतियों और श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व के प्रति आस्था जताते हुए समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल के समक्ष आम आदमी पार्टी की सक्रिय नेता रहीं एवं पूर्व पार्षद प्रत्याशी रितु अग्रवाल सहित लगभग चार दर्जन से अधिक समाजसेवियों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने आशा जताई कि नए साथिययों के आने से समाजवादी पार्टी को और मजबूती मिलेगी। प्रदेश उपाध्यक्ष सीएल वर्मा के प्रयासों से बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी में शामिल लोगों ने वर्ष 2027 में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर पूर्व एमएलसी रामवृक्ष यादव भी उपस्थित रहे।

25 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की नीतियों से प्रभावित होकर लखनऊ पश्चिम विधानसभा के अन्तर्गत आने वाले अंबरगंज वार्ड से नगर निगम पार्षदीय चुनाव वर्ष 2023 में एआईआईएम पार्टी से लखनऊ में सबसे ज़्यादा वोट पाने का रिकॉर्ड बनाने वालीं श्रीमती तसलीम बानो ने बड़ी संख्या में अपने साथियों के साथ लखनऊ महानगर अध्यक्ष

फाख़िर सिद्दीकी की अगुआई में समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

इससे पहले 23 फरवरी को श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व पर आस्था जताते हुए लखनऊ के बड़ी संख्या में भाजपा समर्थकों ने उत्तर विधानसभा की प्रत्याशी सुश्री पूजा शुक्ला के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण करते हुए 2027 के आगामी विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को मजबूती देने और श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लिया।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने सभी को समाजवादी पार्टी में शामिल करते हुए उम्मीद जताई कि इन नए साथियों के आने से समाजवादी पार्टी को और मजबूती मिलेगी।

श्री श्याम लाल पाल ने इस अवसर पर नए साथियों से अपेक्षा की कि पीडीए पर्चा की चर्चा घर-घर, गांव-गांव करते हुए इसका संदेश पहुंचाया जाना चाहिए। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष अल्पसंख्यक सभा श्री शकील नदवी तथा वरिष्ठ समाजवादी नेता श्री देवी बख्श सिंह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

गुजरात में बजा सपा का डंका

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश में प्रचंड जीत के बाद देशभर में समाजवादी पार्टी व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की लोकप्रियता में काफी इजाफा हुआ है। देशभर में यह स्थापित हो चुका है कि श्री अखिलेश यादव विजनरी नेता हैं और उनके नेतृत्व में ही देश में विकास संभव है। गुजरात की जनता ने स्थानीय निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी का समर्थन कर देश को संदेश दे दिया है कि श्री अखिलेश यादव का नेतृत्व ही सच्चा और अच्छा है।

18 फरवरी को गुजरात नगर निकाय के चुनाव परिणाम घोषित हुए। घोषित चुनाव परिणाम के अनुसार गुजरात नगर निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी ने राणावाव नगर पालिका में कुल 28 सीटों में से 20 पर जीत दर्ज की। कुतियाना नगर पालिका में समाजवादी पार्टी ने 24 सीटों में से 14 पर जीत हासिल की। दोनों नगर पालिकाओं में समाजवादी पार्टी का बहुमत है।

इसके साथ ही छोटा उदयपुर में समाजवादी पार्टी के 6 सभासद और खेड़ा पालिका में समाजवादी पार्टी के 4 सभासदों ने जीत दर्ज की। गुजरात में समाजवादी पार्टी की जीत का स्पष्ट संदेश है कि यूपी में 2027 में अखिलेश सरकार आना तय है।

गुजरात नगर निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी की जीत पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने मतदाताओं, सभासदों एवं पार्टी संगठन को बधाई दी।

श्री अखिलेश यादव ने निर्वाचित सभासदों को बधाई देते हुए समाजवादी पार्टी पर भरोसा जताने के लिए गुजरात की जनता का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि नगर निकाय चुनाव में यह समाजवादी पार्टी की बड़ी उपलब्धि है। इस जीत से गुजरात में समाजवादी पार्टी को बड़ी ताकत मिली है। श्री यादव ने विश्वास जताया है कि समाजवादी पार्टी और जीते प्रतिनिधि गुजरात में लोकतंत्र, संविधान की रक्षा और लोगों की जनसमस्याओं के निस्तारण और विकास के लिए संघर्ष जारी रखेंगे।

अधिवक्ताओं को मिला अखिलेश का साथ

बुलेटिन ब्यूरो

अधिवक्ता संशोधन बिल 2025 को लेकर उद्वेलित व आंदोलित अधिवक्ता समुदाय ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से मुलाकात कर समर्थन मांगा। समाज के सभी तबके के हितों के लिए हमेशा खड़े रहने वाले श्री अखिलेश यादव ने अधिवक्ताओं को आश्वासन दिया कि वह पूरी तरह उनके साथ हैं।

22 फरवरी को अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमंडल ने श्री अखिलेश यादव से मुलाकात कर उन्हें ज्ञापन सौंपा जिसमें अधिवक्ता संशोधन बिल 2025 के प्रति विरोध जताया गया है। अधिवक्ता समुदाय ने एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट के पक्ष में समर्थन जुटाते हुए केंद्र सरकार के एडवोकेट एक्ट 1961 में संशोधन कर नया कानून लाने की तैयारी का घोर विरोध किया है और इसे भारतीय संविधान पर हमला बताया है।

ज्ञापन में अधिवक्ताओं ने बताया कि यदि एडवोकेट संशोधन बिल 2025 के ड्राफ्ट में (प्रस्तावित संशोधन धारा-4) के अनुसार बार काउंसिल में तीन सदस्य केन्द्र सरकार द्वारा नामित होने से काउंसिल में सीधे सीधे सरकार का दखल हो जाएगा। प्रस्तावित संशोधन धारा 35ए के अनुसार अधिवक्ता हड़ताल नहीं कर सकेंगे। न ही अधिवक्ता किसी न्यायालय का बहिष्कार कर सकेगा। ऐसा करने पर उसे एडवोकेट रोललिस्ट से हटा दिया जाएगा। (प्रस्तावित संशोधन धारा 26ए) इस संशोधन बिल में अधिवक्ता के व्यवहार की जांच सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के पूर्व जज द्वारा किए जाने का प्रस्ताव है। तीन साल या अधिक की सजा होने पर अधिवक्ता को रोल लिस्ट से हटा दिया जाएगा और विदेशी लॉ फर्म को भी देश में वकालत की अनुमति दी जा सकेगी।

ज्ञापन में कहा गया कि प्रस्तावित नए कानून में ऐसे प्राविधान हैं जो अधिवक्ताओं के हित को सीधे-सीधे प्रभावित कर रहे हैं इसलिए इस प्रस्तावित कानून का विरोध उचित और न्याय के हित में है।

अधिवक्ताओं के बीच समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी अधिवक्ताओं के साथ है। भाजपा सरकार का तानाशाही रवैया लोकतंत्र और संविधान के लिए खतरा है। भाजपा एक-एक कर लोगों के संवैधानिक अधिकारों पर हमला कर रही है। अधिवक्ताओं के संवैधानिक अधिकार अनुच्छेद-19 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अनुच्छेद-21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन करता है। इससे शांतिपूर्ण तरीके से सरकार की गलत नीतियों के विरोध का अधिकार भी समाप्त हो जाएगा किसानों, नौजवानों, महिलाओं की तरह अधिवक्ताओं के साथ भी धोखा हो रहा है।

पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी, एमएलसी आशुतोष सिन्हा, प्रदीप जायसवाल प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पार्टी व्यापार सभा की मौजूदगी में श्री अखिलेश यादव को ज्ञापन सौपने वालों में अधिवक्ता समाज के सर्वश्री विवेकानंद बाबुल, कृष्ण कन्हैया पाल, सिकन्दर यादव, राय साहब यादव, सत्यव्रत यादव आजाद, बालकृष्ण यादव, रामसुत, फैसल खान, जितेन्द्र यादव जीतू, मीनू सिंह यादव, विष्णुदेव यादव, सिराज अहमद खां, श्रीकांत यादव, गुफरान खां, अनुज पाल, सुनील मौर्या, काजिम अकरम, शम्सुद्दीन, जितेन्द्र सिंह यादव, मो अनस सिद्दीकी, फैसल खां, शारदा सिंह यादव, गुफरान खान, अनिल कुमार यादव, आजाद यादव, अजीत कुमार, अंजनी प्रकाश यादव, अंकित यादव, अवनीश कुमार यादव, राम यश यादव, एडवोकेट जीतू कश्यप, फहद भट्ट, पवन कुमार यादव, मो फैजान, सत्यनारायण यादव, अनिल बहादुर यादव, विनोद कुमार यादव, शैलेन्द्र सिंह, मो सलमान, प्रदीप यादव, सतीश चन्द्र यादव टीटू, अंकित कुमार यादव, बालकृष्ण यादव, अजीत कुमार यादव, विपिन पाल, प्रमोद पाल, आर गोस्वामी शामिल रहे।

भाजपा राज में यूपी पर बढ़ रहा कर्ज का बोझ

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने उत्तर प्रदेश को कर्ज में डुबो दिया है। उत्तर प्रदेश पर कुछ नौ लाख करोड़ का कर्ज हो गया है। उत्तर प्रदेश के हर व्यक्ति पर 36 हजाररुपए का कर्ज है।

20 फरवरी को उत्तर प्रदेश विधानसभा में पेश किए गए बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के इस बजट में भी भाजपा सरकार ने 91 हजार करोड़ का कर्ज लिया है। आजादी के बाद 2017 तक यूपी पर तीन लाख करोड़ का कर्ज था लेकिन श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार पिछले आठ साल में 6 लाख करोड़ रुपये का और कर्ज ले चुकी है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार उत्तर प्रदेश को लगातार कर्ज के बोझ से दबा रही है। भाजपा सरकार अपनी गलत आर्थिक नीतियों से देश-प्रदेश की अर्थव्यवस्था से भी खिलवाड़ कर रही है। यह सब भाजपा सरकार चंद पूंजीपतियों के मुनाफे के लिए कर रही है। इस सरकार में गरीब और गरीब होता जा रहा है। महंगाई, बेरोजगारी से हर वर्ग परेशान है। किसान, नौजवान, व्यापारी, महिलाएं सभी परेशान है। लोगों के हाथ में पैसा नहीं है। जनता की जेबें खाली हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि प्रदेश और केंद्र की सरकार में विकास योजनाएं सिर्फ कागजों पर हैं। सरकार झूठे आंकड़े देकर जमीनी सच्चाई को छिपाने का प्रयास कर रही है। हर विभाग में भ्रष्टाचार है। प्रदेश में इतना भ्रष्टाचार कभी नहीं रहा है। निर्माण कार्यों से लेकर स्वास्थ्य, पुलिस विभाग हर जगह भ्रष्टाचार है। भाजपा सरकार पूरी तरह से झूठ, लूट और बेईमानी की नीति पर चल रही है। जनहित में कोई काम नहीं हो रहा है। किसानों, नौजवानों समेत आम लोगों की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। गरीबों के साथ अन्याय बढ़ता जा रहा है। हर वर्ग निराश और दुःखी है।

श्री यादव ने कहा कि जनता चुनाव का इंतजार कर रही है। 2027 में भाजपा की झूठ, लूट और बेईमानी वाली सरकार को जनता हमेशा के लिए सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा देगी।

युवा निवेशकों पर भारी पड़ रही शेयर बाजार की गिरावट

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भारत के शेयर बाजार में गिरावट पर गहरी चिंता जाहिर की है।

उन्होंने कहा कि चिंता की बात है कि कुछ महीनों से निफ़्टी के लगातार ख़राब प्रदर्शन के कारण ये समाचार आ रहे हैं कि इस वर्ष भारतीय शेयर मार्केट दुनिया के उभरते बाजारों में थाईलैंड व फ़िलीपीन्स के बाद तीसरा सबसे कमज़ोर शेयर मार्केट हो गया है। उन्होंने चिंता जाहिर की कि शेयर मार्केट की भारी गिरावट से सबसे ज्यादा युवा निवेशक प्रभावित हुए हैं।

देश के करोड़ों युवा निवेशकों को भारी नुकसान हुआ है। उनकी गाढ़ी कमाई निवेश करने के बाद बढ़ने के बजाय कम हो गई। यही वजह है कि निवेशक कह रहे हैं कि अब उन्हें नहीं चाहिए भाजपा।

उन्होंने कहा कि भारतीय शेयर बाज़ार में जारी गिरावट मध्य वर्ग के निवेश को लील गयी है। दुनिया भर से निवेशकों को आमंत्रण देने की होड़ में लगीं 'डबल इंजन' की सरकारें पहले अपने निवेशकों को तो सुरक्षित कर लें फिर किसी और को आश्वस्त करने के 'ढोंगी इवेंट' करें।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि शेयर बाज़ार की गिरावट सालों-साल का रिकॉर्ड तोड़ रही है। इसका सबसे ज़्यादा बुरा असर आम जनता और मध्य वर्ग पर पड़ा है। भाजपा की पक्षपाती आर्थिक नीतियों में जितनी गिरावट होगी उतनी ही गिरावट शेयर मार्केट में भी होगी और डॉलर के मुक़ाबले रुपये के मूल्य में भी।

श्री यादव ने कहा कि केन्द्र सरकार शेयर मार्केट में युवा निवेशकों की गाढ़ी कमाई की सुरक्षा करने और उनको भरोसा देने में नाकाम है। बड़ी संख्या में निवेशक बर्बादी के हालत में आ चुके हैं।

श्री यादव ने आशंका जाहिर की कि शेयर मार्केट में गिरावट का असर अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र पर पड़ेगा। युवा पीढ़ी का ये नुक़सान ईएमआई पर लिये गये घरों और सामानों पर भी पड़ेगा और भुगतान न कर पाने की अवस्था में लोन देने वाले बैंक और फ़ाइनेंस कंपनियां भी इस गिरावट की चपेट में आ जाएंगी। सरकार तुरंत कुंभकर्णी नींद से जागे और 6 महीने से गिर रहे बाज़ार को बचाने के उपाय ढूंढे नहीं तो ये मान लिया जाएगा कि सरकार को बाज़ार चला रहा है, और सरकार पूरी तरह असफल हो चुकी है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार नागरिकों को 'ग्राहक' समझकर उनका उत्पीड़न करना बंद कर दे व युवा और आम जनता के धन और निवेश का शोषण करने वालों को दंडित करे।

सरकार अपनी ज़िम्मेदारी से भाग नहीं सकती, युवा पीढ़ी अपनी एक-एक पाई का हिसाब सरकार से लेकर रहेगी। उन्होंने युवाओं से अपील की है कि वे अपनी मेहनत की कमाई को बहुत सोच-समझकर ही कहीं लगाएं और बहलाने-फुसलाने और लुभाने वालों के जुमलों से दूर रहें।

आचार्य नरेन्द्र देव को श्रद्धांजलि

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी चिंतक आचार्य नरेन्द्र देव जी की 69वीं पुण्यतिथि पर 19 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने उनके गोमतीनगर स्थित समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की और आचार्य जी के चित्र पर माल्यार्पण किया।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम के अवसर पर आचार्य जी के परिवार की श्रीमती मीरावर्धन, यशोवर्धन, देवक वर्धन, कनिष्क वर्धन तथा प्रपौत्र मौजूद रहे। उन्होंने भी पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

समाजवादी चिंतक आचार्य नरेन्द्र देव को श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में सर्वश्री पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, उज्जवल रमण सिंह सांसद, विधायक रविदास मेहरोत्रा, प्रो आनन्द कुमार, डॉ अशोक बाजपेयी, सुधीर हलवासिया, जिलाध्यक्ष जयसिंह जयंत, महानगर अध्यक्ष फाकिर सिद्दीकी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं-नेताओं ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

संत गाडगे: मानव सेवा के लिए समर्पित

बुलेटिन ब्यूरो

स्वच्छता के प्रणेता एवं सामाजिक समरसता के प्रतीक संत गाडगे की जयंती 23 फरवरी को समाजवादी पार्टी प्रदेश मुख्यालय पर सादगी से मनाई गई।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की ओर से पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी ने संत गाडगे के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

जयंती के अवसर पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, पूर्व सांसद अरविंद कुमार सिंह, समाजवादी पार्टी के पूर्व प्रत्याशी मलिहाबाद विधानसभा क्षेत्र सोनू कनौजिया द्वारा भी संत गाडगे जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

अपने वक्तव्य में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने संत गाडगे को नमन करते हुए कहा कि संत गाडगे महाराज ने अपने जीवन को मानव सेवा और आध्यात्मिकता के लिए समर्पित किया। उन्होंने सादगी और स्वच्छता के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दी। उनकी शिक्षाएं आज भी समाज को प्रेरित करती हैं। वह एक संत और समाज सुधारक थे। उन्होंने मानव सेवा और समाज सुधार को आध्यात्मिकता का सबसे अच्छा जरिया माना। उन्होंने सामुदायिक स्वच्छता को बढ़ावा देने और समाज से अंधविश्वासों को मिटाने के लिए लगातार प्रयास किया।

फार्म ४

(नियम ८ देखिए)

१	प्रकाशन का स्थान -	समाजवादी बुलेटिन, 19 विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ
२	प्रकाशन अवधि-	मासिक
३	मुद्रक का नाम-	प्रो. रामगोपाल यादव, सदस्य राज्यसभा
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
४	प्रकाशक-	प्रो. रामगोपाल यादव
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
५	संपादक-	प्रो. रामगोपाल यादव
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
६	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	समाजवादी पार्टी, 19 विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ

मैं प्रो. रामगोपाल यादव एतदद्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक- 1 मार्च 2025

प्रकाशक के हस्ताक्षर
प्रो. रामगोपाल यादव

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh
Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

नेता जी की जनसेवा की भावना से प्रेरित होकर महाकुंभ में श्रद्धालुओं की महासेवा का जो संकल्प उठाया था, उसके सफलतापूर्वक संपन्न होने पर यहाँ आए हुए सभी दर्शनार्थियों, सहयोग करनेवाले अनगिनत हाथों, अतिथियों, आगंतुकों, पर्यटकों व दिन-रात समर्पित आयोजकों को हार्दिक बधाई व भविष्य के आयोजनों के लिए अनंत शुभकामनाएँ!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 25 Feb

समाजवादी जब 'सवालवादी' बन जाते हैं तो सत्ताधारियों की जुबान लड़खड़ाने लगती है।

जो संविधानवादी हैं, वो ही समाजवादी हैं।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

सपा द्वारा शुरू की गयी DBT की प्रशंसा करने के लिए साधुवाद!

सीधे खाते में पैसे भेजने की डीबीटी योजना को सफल बनाने के पीछे जिस 'जिओ नेटवर्क' की भूमिका रही, उसकी शुरुआत भी सपा ने ही की थी।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

छियालीस में छप्पनवालों की उल्टी गिनती जारी है
आनेवालों की तो गिनती बढ़ती गयी,
जानेवालों की ठहरी गिनती पर चुप्पी साधी है।

Translate post

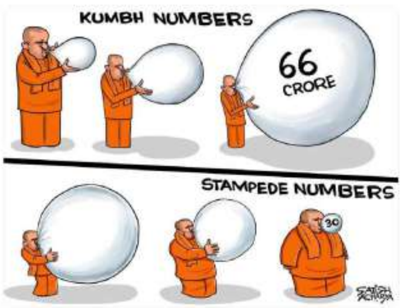

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 3d

सच तो ये है कि अवैध रूप से गिराये गये घरों को सरकारी नहीं बल्कि जिनकी 'मुख्य' गलती है उनके व्यक्तित्व पैसों से बनवाना चाहिए।

इस बुलडोजरी घात से घर के मालिकों को जो मानसिक आघात पहुँचा है, उसकी क्षतिपूर्ति के लिए उत्पीड़क को दंड भी मिलना चाहिए।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

दो मिनट का मौन न सही... महाकुंभ में इतनी बड़ी बात लिखते समय, दो शब्द मृतकों और लापता लोगों के लिए भी लिख देते।

सच को छिपाना 'अपराधबोध' की निशानी होती है।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

डाटा सेंटर खोलनेवाले घपलेबाज का ही बायोडाटा सरकार के पास नहीं है तभी तो भाजपा सरकार में लोग ठगे जा रहे हैं।

नक़ली समझौता नक़ली करार
आज नहीं तो कल होगा फ़रार

Translate post

13500 करोड़ का एमओयू करने वाला निकला ठग, गिरफ्तार

प्रदेश के सभी जिलों में 750 डाटा सेंटर खोलने का लिया था ठेका, निवेशकों को लगाया 3500 करोड़ का चूना

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!

हम 2027 में 'स्त्री सम्मान-समृद्धि योजना' लाएंगे और हर बालिका, युवती, नारी को सबल बनाएंगे

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

ऐसे समर्पित कार्यकर्ता ही सपा की मज़बूत नींव हैं।

Translate post

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

ICC चैंपियन्स ट्राफ़ी में जीत के लिए सभी खिलाड़ियों और देशवासियों को बधाई और शुभकामनाएँ!

ये एकता की जीत है।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 3h

जो अख़बार अपने पत्रकार की हिफ़ाज़त नहीं कर सकता वो सच की रक्षा क्या करेगा।

मृतक के परिवार को तत्काल 1 करोड़ का मुआवजा दिया जाए और आरोपियों को दंड देकर सच्चा न्याय भी हो।

#राघवेंद्र_बाजपेई_हत्याकांड

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

जिन अधिकारियों को होली और ईद के गले मिलने में एकरूपता देखनी चाहिए अगर वो ही नकारात्मक बात करेंगे तो भेदकारी भाजपा के राज में सौहार्द की रक्षा कैसे होगी।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

आज महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर इटावा में निर्माणाधीन श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर में महाभक्तों के लिए अलौकिक दर्शन-पूजन के महासौभाग्य के क्षण।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

चित्रकूट में एक रिक्शा चालक के क़र्ज़ पर लिए रिक्शे को भ्रष्ट अधिकारी द्वारा ज़ब्त करके 50 हज़ार की घूस की माँग पूरी न कर पाने पर रिक्शा चालक द्वारा आत्महत्या की ख़बर दिल दहला देनेवाली है।

आत्महत्या से बड़ा भाजपा के भ्रष्टाचारी शाससनकाल का प्रमाण और क्या हो सकता है।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

जब आपन कुर्सी हिले तभए मन का आपा खोए
ऊ का औरन के इलाज करे जो खुदए बीमार होए

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

कोई करोड़ों की कमाई की कहानी सुना रहा है संसार में
और इधर कोई सिक्के ढूँढता रह गया गंदगी के अंबार में

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

सभी को रमज़ान की दिली मुबारकबाद।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

किसी के 'भौतिक वमन' पर ही कार्रवाई होगी या किसी के 'वचन-वमन' पर भी।

पक्ष-विपक्ष का विचार किये बिना उप्र विधानसभा को हर तरह से दूषित करनेवालों पर स्पीकर साहब ही चिंतन-विमर्श कर सकते हैं क्योंकि ये उनका ही अधिकार-क्षेत्र है।

शिष्टाचार कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

श्रीमती सावित्रीबाई फुले जी को उनकी पुण्यतिथि पर शत-शत नमन!
महिला शिक्षा की जननी, सामाजिक न्याय की प्रहरी—उनका योगदान अनमोल है।

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 44 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

सहसा वीणा झनझना उठी...
अवतरित हुआ संगीत
राजा ने अलग सुना ...
रानी ने अलग सुना ...
सबने भी अलग-अलग संगीत सुना।...
इसको
वह भरी तिजोरी में सोने की खनक।...
बटुली में बहुत दिनों के बाद अन्न की सोंधी खुदबुद...
किसी एक को नई वधू की सहमी-सी पायल ध्वनि।...
किसी दूसरे को शिशु की किलकारी।...
एक तीसरे को मंडी की ठेलमठेल, गाहकों की आस्पर्धा भरी बोलियाँ,...
उसे युद्ध का ढोल।...
इसे संझा-गोधूलि की लघु टुन-टुन—
उसे प्रलय का डमरू-नाद।...
इयत्ता सबकी अलग-अलग जागी,
संघीत हुई,...
पा गई विलय।
वीणा फिर मूक हो गई।

साधु! साधु!

अज्ञेय जी की 'असाध्य वीणा' से साभार!

@yadavakhilesh

समाजवादी पार्टी
/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in

QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें
/Akhilesh Yadav
/Samajwadi Party